वार्षिक शुल्कः ३५/- रुपये

दिल का द्वार खोल



ol. 2 No. 3 March, 2008



साधु वासवानी

मिशन की आस्था

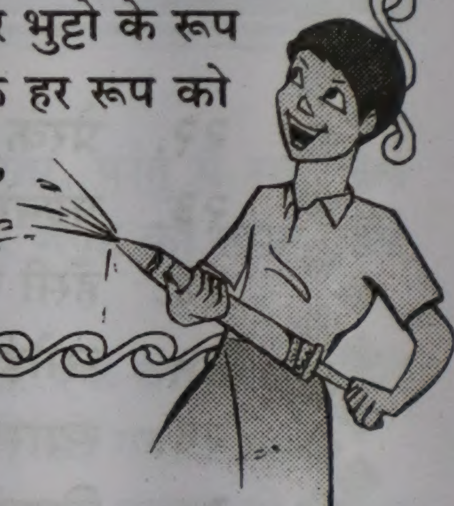
साधु वासवानी मिशन इस शाश्वत सत्य पर बड़ी ही गहन आस्था रखता है कि, ''इस चराचर जगत की हर रचना में, चाहे वह सजीव हो या निर्जीव, उस परमपिता की ही चेतना प्रवाहित होती है।''

मिशन का विश्वास है कि, हमारे जीवन को आध्यात्मिक स्तर पर ऊँचा उठाने के लिए संकीर्तन (सामूहिक भजन कीर्तन), प्रार्थना, ध्यान, परमार्थ अर्थात सबके प्रति दया व करुणा तथा दूसरों के लिए जीवन जीना अनिवार्य है। इस संसार में कोई भी पराया नहीं है... हम सब का उद्‌गम एक ही परम चेतना से हुआ है।

यह पृष्ठ साधु वासवानीजी के
एक भक्त की शुभ कामनाओं के साथ प्रस्तुत है।

संपादकीय

विश्व भर में वर्ष का एक दिन महिलाओं को भी अर्पित किया गया है। कैसी विडम्बना है, जो स्त्री प्रकृति की संगिनी है, उसकी सृजनशीलता में बराबर की हिस्सेदार है। माँ के रूप में संतानों की उत्पत्ति करती है, बहन बन कर दुलराती है, पत्नी बन कर परिवार की वंश वेल को बढ़ाती है। त्याग और वात्सल्य की प्रतिमूर्ति इस स्त्री ने इस संपूर्ण समाज को अपने निस्वार्थ स्नेह से सींचा है। उसने लक्ष्मी बन कर आर्थिक सहयोग दिया तो सरस्वती बन कर ज्ञान को महिमा प्रदान की। जब-जब भी इस समाज में निरंकुशता बढ़ी तो काली बन कर उसका संहार किया। स्त्री देवी है, पूजनीय है, सती है, सावित्री है, मीरा है, राधा है, मदर टेरेसा है, लक्ष्मीबाई है, जोन ऑफ आर्क है, नाईटिंगेल है, हेलन केलर है। उसके हर रूप की अपनी गरिमा है...उसने कभी नूरजहाँ के रूप में, इंदिरा गाँधी के रूप में, बेनज़ीर भुट्टो के रूप में अपने खून से इस धरती को सींचा है...स्त्री के हर रूप को नमन, और एक विनती कि वह फिर से राम, कृष्ण, गांधी जैसी उच्च संस्कारी संतानों की जननी बने।



दिल का द्वार खोल

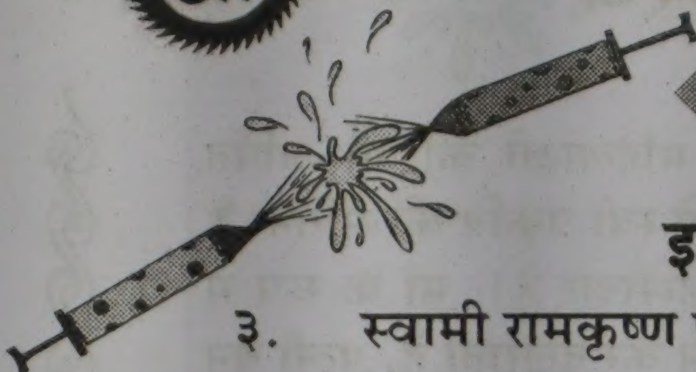
(आत्म ज्ञान, आत्मिक उन्नति तथा आत्म बोध के लिए मासिक पत्रिका)

वार्षिक शुल्क :		आजीवन शुल्क :	
भारत में :	३५/- रुपये	भारत में :	१०००/- रुपये
विदेश में :		विदेश में :	
सामुद्रिक डाक :	$ ५.०० या ३.५० £	सामुद्रिक डाक :	$ १२५
हवाई डाक :	$ १०.०० या ५.०० £	हवाई डाक :	$ २५०

मैनेजर
दिल का द्वार खोल
१०, साधु वासवानी पथ, पुणे - ४११ ००१. (भारत)
दूरभाष - ०२० - २६११ ३३६०
कृपया अपने सभी डी.डी. ''साधु वासवानी मिशन'' के नाम से भेजें।

मार्च, २००८
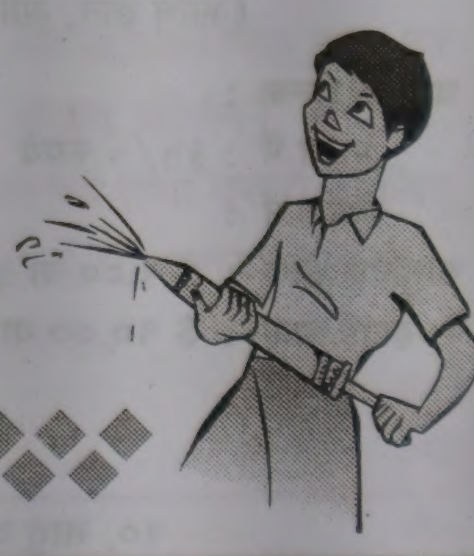
अंक १७



इस अंक में

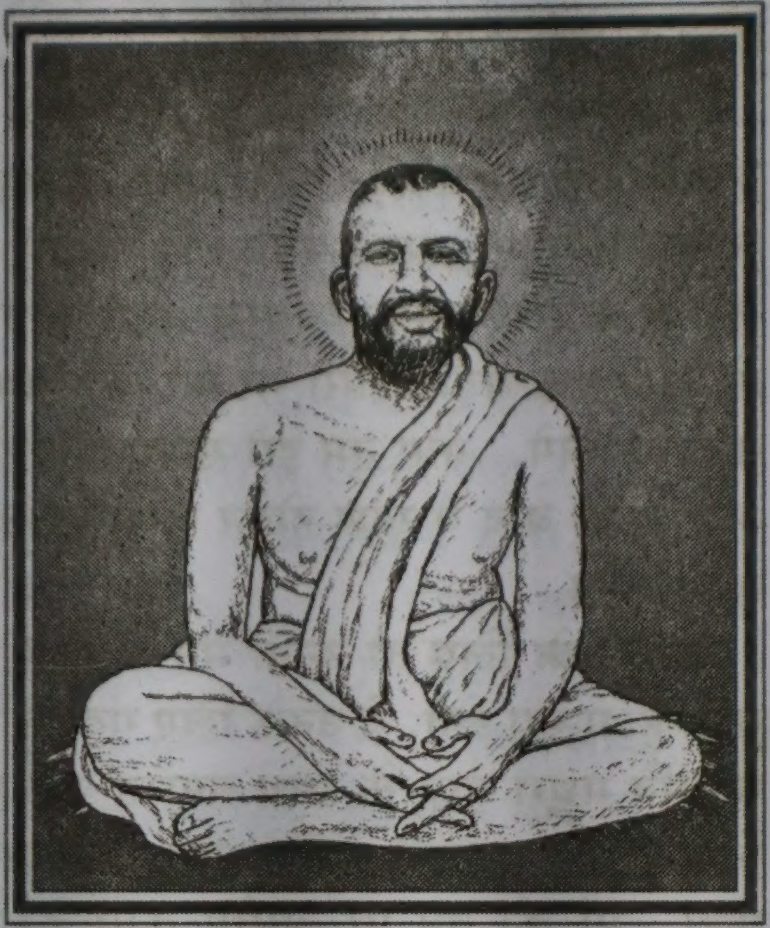
नियमित स्तंभ

विशेष



स्वामी रामकृष्ण परमहंस की अमिट स्मृतियाँ

साधु टी.एल.वासवानी



श्री रामकृष्ण परमहंस एक महान संत थे। वे माँ काली के अबोध,मासूम बच्चे थे। एक बार जब उन्होंने एक धनिक को उपदेश दिया कि...कैसे प्रभु का नाम स्मरण हमें पवित्र कर देता है, और हमें महा-बलवान बना देता है। इस पर अहंकारी सेठ क्रोधित होते हुए बोला-तुम एक फटेहाल गरीब संत हो, मुझ जैसे करोड़पति को उपदेश देने की तुमने हिम्मत ही कैसे की? क्या तुम सब कुछ जानने का दावा कर सकते हो?

संत रामकृष्ण ने दोनों हाथ जोड़ कर कहा मैं सब कुछ जानने का दावा तो नहीं करता, परंतु मैं स्वयं को झाड़ू समझता हूँ, जो स्वयं तो गंदा रहता है परंतु उसमें हर जगह को साफ़ करने का सामर्थ्य होता है।

भगवान श्रीकृष्ण के प्रति उनके मन में अपार श्रद्धा थी...एक बार नीले फूलों को देखते ही वे अपने नटवर नागर के नीले चेहरे की याद में खो गए।

एक बार जब वे वृंदावन की पावन धरती पर पहुँचे तो उन्हें स्मरण हो आया कि यहीं तो कृष्ण के अधरों पर रखी मुरली ने लाखों के दिलों को आंदोलित कर थिरकने को मजबूर कर दिया था। वे भाव-विभोर होकर पुकार उठे-हे कृष्ण तुम कहाँ हो? उन्होंने उस धरती से थोड़ी सी रज उठा कर अपने मस्तक पर लगाई और उसका कुछ हिस्सा अपने दक्षिणेश्वर के मंदिर की कुटिया में छिड़कते हुए कहा कि-अब यह स्थान भी वृंदावन की तरह ही पवित्र बन गया है।

कृष्ण के प्रति उनकी स्नेह भावना आश्चर्यजनक थी और वैसी ही श्रद्धा उन्हें ईसा-मसीह के प्रति भी थी। वे दक्षिणेश्वर के मंदिर में भी ईसा के फोटो के सामने धूप बत्ती जलाते थे। वे ईसा मसीह को स्नेह का मूर्त स्वरूप कहते थे। वे कहते थे यह योगी तो उस ईश्वर से जुड़ कर सदा के लिए अमर हो गया है।

---

*९ मार्च – संत रामकृष्ण परमहंस जयंती।

रामकृष्ण की स्कूली शिक्षा तो ज़्यादा नहीं थी परंतु आध्यात्मिक शिक्षा को उन्होंने इतनी ऊँचाई तक ग्रहण कर लिया कि वे एक महान संत, एक फ़कीर और ईश्वर के निर्मल सेवक बन गए। एक वक्त जब विवेकानंद ने उनसे पूछा-क्या आपने ईश्वर को प्रत्यक्ष देखा है? उन्होंने कहा-हाँ! मैंने ईश्वर को इसी तरह देखा है, जैसे मैं तुम्हें देख रहा हूँ।

रामकृष्ण की याद आते ही मेरे मन में एक छोटा सा बच्चा याद हो आता है...वे कई बार स्वयं अपने शरीर से बाल सुलभ प्रश्न पूछा करते थे। उन्हें जलेबियाँ बहुत ज़्यादा पसंद थीं। वे उसे वाईसराय की बग्घी कहते थे। घर में जलेबी के लिए हमेशा व्यवस्था रखी जाती थी। एक दिन वे केशु से मिलने गए तो उसने एक बड़ी तश्तरी भर कर जलेबियाँ उनके चरणों में रखीं... तो वे स्वयं बतियाने लगे...क्या तुम इसे खाना चाहोगे? खा लो भई खा लो, खा लो ना। और इसके बाद वे खुश होकर जलेबियाँ बड़ी मासूमियत से, स्वाद ले-ले कर खाने लगे।

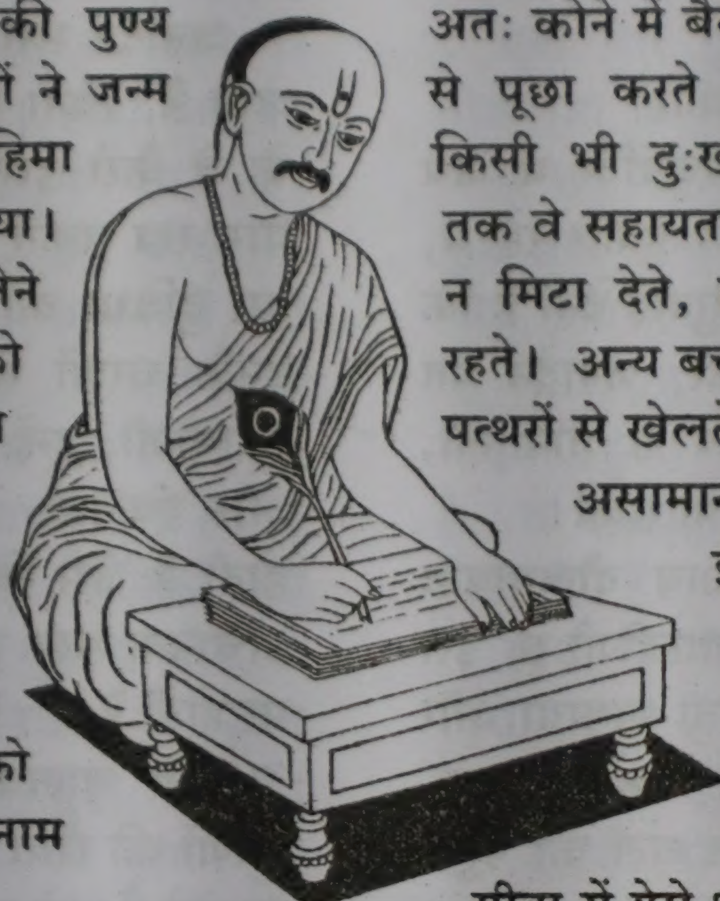
दरिद्रों के लिए तो उनके मन में ऐसी करुणा थी कि...वे मंदिरों में उनका बचा हुआ खा लेते, वे उनके लिए गंदी से गंदी जगहों पर सो जाते। एक बार वे धनपति मथुरा बाबु के साथ बनारस जा रहे थे, रास्ते में उन्हें गरीबों की बस्ती दिखाई दी। उनकी दारुण दशा देख कर उनका हृदय चीत्कार उठा। उन्होंने कहा...माँ की तुम पर असीम कृपा है, तुम इसी वक्त इन सभी को भोजन कराओ और पहनने के लिए कपड़े दिलवाओ। धनपति जब थोड़े सकुचाने लगे तो रामकृष्ण ज़ोरों से रोने लगे और कहने लगे...मुझे बनारस नहीं जाना है, मैं इन्हीं लोगों के साथ यहीं रहूँगा। ऐसा कहते हुए वे उनके बीच जा बैठे। यह देख कर वे धनपति विचलित हो उठे, ओर उन्होंने उसी वक्त सबके भोजन व वस्त्र की व्यवस्था की। रामकृष्ण इसके बाद ही बनारस जाने पर राज़ी हुए।

रामकृष्ण का नाम सुन कर ही मेरे कानों में एक दिव्य संगीत बजने लगता है...मुझे वे पूर्व और पश्चिम दोनों के प्रतीक महसूस होते हैं।

आज जब भारत में पश्चिम की हवा प्रवेश कर चुकी है...आज हर तरफ़ संस्कृति और अर्थशास्त्र का औद्योगीकरण हो रहा है...हर तरफ़ जीवन की गति सांसारिक भोगों की तरफ़ आकर्षित हो रही है। आज ऋषियों की परम्परा को छोड़ साम्यवाद का नारा लगाया जा रहा है। इंसानियत के विचारों को त्याग कर लेनिनग्राड के अधार्मिक अजायबघर पर गर्व महसूस किया जा रहा है। आज गीता और उपनिषदों के उपदेशों को नज़रअंदाज़ कर लेनिन और मार्क्स के गुणगान किए जा रहे हैं। आज भारत की कन्याएँ अपनी गरिमा को त्याग कर पश्चिम के सुर में कह रही हैं कि हमें ईश्वर पर विश्वास नहीं है। आज जीवन का कोई मतलब नहीं है, कोई उद्देश्य नहीं है। ऐसे में श्री रामकृष्ण परमहंस के उपदेश ही उपयोगी हैं। ●

संत एकनाथ

जे.पी.वासवानी



तेरहवीं सदी से सत्रहवीं शती में महाराष्ट्र की पुण्य भूमि पर अनेक संतों ने जन्म लेकर ईश्वर की महिमा का गुण-गान किया। उनके अंतर को छू लेने वाले भजनों को अभंग कहते हैं। इन अभंगों में आत्मिक अनुभव और जीवन जीने की शिक्षाएँ भरी हुई हैं। इन भक्तों ने कृष्ण को विठोबा या विट्ठल नाम दिया।

पंढरपूर में स्थित विठोबाजी का मंदिर उस समय के संतों की आराध्यस्थली था। संत ज्ञानेश्वर, नामदेव, एकनाथ, रामदास और तुकाराम ने उस वक्त भक्ति की रसधारा बहाई थी।

उस वक्त के एक संत एकनाथ की भक्ति की कई कथाएँ प्रसिद्ध हैं। वे अपने पिता सूर्यनाथ तथा माता रुक्मिणी की एकमात्र संतान थे। वे उन्हें प्यार से एकिया कह कर पुकारते थे।

माता-पिता की मृत्यु के बाद इनका लालन-पालन इनकी दादी तथा दादा ने किया। बचपन से ही इनके अंदर आध्यात्म की प्यास थी, अतः कोने में बैठ कर अक्सर स्वयं से पूछा करते कि-मैं कौन हूँ? किसी भी दुःखी दरिद्र की जब तक वे सहायता कर उसकी पीड़ा न मिटा देते, तब तक वे बेचैन रहते। अन्य बच्चों की तरह वे भी पत्थरों से खेलते परंतु उनका खेल असामान्य होता। वे उन्हें ईश्वर का रूप दे देते... उन्हें ब्रह्मा, विष्णु, महेश मान कर उन पर फूल चढ़ाते।

गीता में ऐसे भक्तों को श्रीकृष्ण ने योगभ्रष्ट कहा है, जो योग के पथ पर चल रहे थे परंतु किसी कारण बाधित हो गए या उनकी मृत्यु हो गई और उनका लक्ष्य अधूरा रह गया। ऐसे भक्तों की साधना विफल नहीं होती। वे फिर से इस पृथ्वी पर किसी अच्छे परिवार में जन्म लेकर अपने अधूरे लक्ष्य को प्राप्त कर लेते हैं।

संत एकनाथ भी एक ऐसे ही योगभ्रष्ट थे, जो अपने पूर्व जन्मों की साधना का धागा साथ लाए थे। उन्हें बारह वर्ष की आयु में ही श्रीमद् भागवत-पुराण का अच्छा ज्ञान हो गया था। वेदों का अध्ययन कर

*२८ मार्च – संत एकनाथ जयंती।

अपने अंतर में प्रभु-मिलन की प्यास जगा ली थी। वे हर दम पुकारते रहते

जाऊँ कहाँ ऐ प्रीतम,
पाऊँ कहाँ तेरा दीदार?
बिन दर्शन तेरे,
मेरा जीवन है बेकार

एक बार वे शिवमंदिर में जब रो-रो कर शिव को पुकार रहे थे, तब उन्हें देववाणी सुनाई देती है कि तुम देवागिरी जाकर, जनार्दन पंत नामक एक सत्पुरुष से ज्ञान लो, ताकि अपनी मुराद पा सको।

देवागिरी को अब दौलताबाद कहते हैं। उन्होंने शास्त्रीजी से इस गाँव के बारे में पता लगाया और बिना दादा-दादी को बताए, चालीस मील पैदल चल कर पहुँच गए। जनार्दन पंडित को साष्टांग नमन कर वे उनके चरणों को अपने आँसुओं से धोने लगे।

जनार्दन पंडित इस अजनबी बालक को देख कर आश्चर्य में पड़ गए...उन्होंने स्नेह से उन्हें उठा कर गले से लगा कर पूछा-बेटा क्यों रो रहे हो, तुम्हें क्या चाहिए?

एकनाथ... बस आपके चरणों मे स्थान चाहिए।

जनार्दन स्वामी-बेटे क्या आपके घर में कोई अभिभावक है?

एकनाथ-हाँ, घर पर मेरे वृद्ध दादा-दादी हैं।

जनार्दन स्वामी- क्या यहाँ आने से पहले तुमने उनकी अनुमति ली थी?

एकनाथ-अगर अनुमति माँगता तो कभी नहीं मिलती, मैं तो आपके लिए तड़प रहा था, अतः चुपचाप चला आया।

जनार्दन स्वामी धर्मसंकट में पड़ जाते हैं, बिना परिवार की सहमति के वे कैसे इस बालक को अपने पास रख सकते हैं? एकनाथ उनकी इस दुविधा को समझ कर फिर से उनके चरणों में लोटने लगते हैं। स्वामीजी उन्हें स्वीकार कर लेते हैं और एकनाथ को ऐसी प्रसन्नता होती है जैसे किसी महाकंजूस को अचानक गढ़ा हुआ धन प्राप्त होने पर होती है।

अब बालक एकनाथ गुरु के चरणों की सेवा में स्वयं को समर्पित कर देते हैं। वे गुरुजी का घर बुहारते, नदी से स्नान का पानी भर कर लाते, शय्या बिछाते, भोजन बना कर परोसते। पूजा के समय वे पास ही आँखें बंद किए बैठे रहते कि उन्हें किसी चीज़ की आवश्यकता न पड़ जाए। रात भर कुटिया के बाहर जाग कर पहरा देते कि कहीं वे पुकारें और मैं नींद में न होऊँ। गुरु की यह सेवा छः वर्षों तक चलती रही और एकनाथ अठारह वर्ष के हो गए।

स्वामी जनार्दन हर गुरुवार को निर्जल मौन व्रत रखते थे। उस वक्त वहाँ के मुसलमान शासक ने श्रद्धावश गुरुवार को पूरे राज्य में

अवकाश का दिन घोषित कर दिया।

एक गुरुवार को गुरुजी अपनी ध्यान साधना में लीन थे। एकनाथ कुटिया के बाहर पहरा दे रहे थे, तभी दुश्मनों ने राजा के किले पर हमला बोल दिया। लोग जनार्दन स्वामी की शरण में आते हैं। एकनाथ सोचते हैं...इस छोटी सी बात के लिए गुरु की साधना में क्यों विघ्न डाला जाए। वे लोगों से कहते हैं...चलो हम सब मिल कर दुश्मनों पर विजय प्राप्त करते हैं। वे शस्त्रागार में जाकर सैनिकों की पोशाक पहनते हैं, गुरु के घोड़े पर सवार होकर सैनिकों के साथ दुश्मनों के छक्के छुड़ा देते हैं। उनकी वीरता के सामने दुश्मन दुम दबा कर भाग खड़े होते हैं। एकनाथ वापस आश्रम में पहुँच कर सैनिक वर्दी उतार कर, घोड़े को वापस अस्तबल में बाँध, गुरु की कुटिया के बाहर यथावत पहरा देने लगते हैं।

तीन दिन के बाद कुछ भक्त आकर कहते हैं आपके शिष्य ने तो कमाल कर दिया, दुश्मनों को हरा कर भगा दिया। गुरुजी अपने भक्त की वीरता और विनम्रता पर दंग रह गए।

एक बार गुरु जनार्दन ने उन्हें तीर्थयात्रा के लिए भेजा, ताकि वे अन्य संत महात्माओं के दर्शन कर कुछ ज्ञान प्राप्त कर सकें। वे अपने साथ गंगाजल लेकर रामेश्वरम जा रहे थे... राह में उन्हें प्यास से दम तोड़ता हुआ एक गधा मिलता है...वे दयावश सारा गंगाजल उसे पिला देते हैं।

साथ के तीर्थयात्री जब इसका विरोध करते हैं तो वे कहते हैं...हर एक जीव ईश्वर का ही रूप है...उसकी सेवा करने से ईश्वर प्रसन्न होते हैं। गंगाजल पीने से इसकी भी मुक्ति हो जाएगी। मुझे तो इसकी आँखों में मेरे गुरु की छवि नज़र आ रही है। उन्हें तो हर ओर सिर्फ़ गोविंद ही नज़र आते थे। इस महान संत के चरणों में शत-शत प्रणाम। •

महाशिवरात्रि

(ओम् नमः शिवाय)

डॉ. सुनील केशव देवधर (आकाशवाणी, पुणे)

जब हम ईश्वर शब्द का प्रयोग करते हैं, तो उसे गॉड या अल्लाह की तरह समस्त चराचर विश्व के एक मात्र जनक, पालक, संहारक और स्वामी के रूप में करते हैं। परन्तु ईश्वर शब्द का तकनीकी अर्थ है, ''शिव'' अर्थात शंकर। इसीलिए शिवजी के लिए प्रयुक्त किए जाने वाले शब्दों में प्रायः ईश्वर शब्द जुड़ा रहता है, जैसे, ओंकारेश्वर, सोमेश्वर, विश्वेश्वर, केदारेश्वर, मतंगेश्वर, महेश्वर आदि अर्थात अचेतन रूप से ही हम यह स्वीकार करते हैं कि महादेव शंकर ही ईश्वर हैं।

भारतीय चेतना में महादेव की निर्गुण निराकार कल्पना भी है। वैसे भी वे यानि शिव प्रतिबन्धित नहीं है, उनमें कोई बाधा नहीं है। वे भक्त के लिए सगुण साकार भी हो सकते हैं, बैल पर सवार जटाजूट धारी, सिर पर चन्द्र और गंगा, गले में सर्प आदि आदि। इसी जटाजूट धारी, शिव के विवाह का पवित्र पर्व है महाशिवरात्रि। भगवती देवी पार्वती के अनेक तप का प्रतिफल है, उसे शिव की पति के रूप में प्राप्ति। भगवान शिव का परिवार समन्वय और सौजन्य का अन्यतम उदाहरण है। जिनके तेज से जन्मतः परस्पर विरोधी प्रकृति के शत्रु भी मित्रवत वास करते हैं, पार्वती का सिंह (शेर) शिव के नन्दी बैल से कुछ नहीं कहता। शिवपुत्र कार्तिकेय का वाहन मोर, शिव के गले में पड़े सर्प जैसे अपने पारम्पारिक शत्रु को छूता तक नहीं। शिव के गण वीरभद्र का कुत्ता श्रीगणेश के चूहे(मूषक) को ताकता भी नहीं, घात की बात तो दूर। अर्थात ये सब परस्पर, अपने



*६ मार्च – महाशिवरात्रि

विरोधी भाव को छोड़कर आपस में सहयोग और सद्भाव बनाए रखते हैं। दूसरी ओर हम मनुष्य हैं, जो अपने ज्ञान के अहंकार में ब्रह्मा, विष्णु, महेश की एकीकृत शक्ति से परे उन्हें निर्गुण, सगुण, साकार, निराकार, ज्ञान और भक्ति में विभाजित करते-करते शैव और वैष्णव हो जाते हैं और एक दूसरे का विरोध भी करते हैं। जब कि श्रीराम चरित मानस में शिवजी स्वयं भगवती पार्वती से कहते हैं।

राम अर्तक्य बुद्धि, मन, बानी, मत हमार अस सुनहूँ सयानी।

दूसरी ओर प्रभु श्री राम कहते हैं,

''शिवद्रोही मम् दास कहावा ते नर मोहें सपनेहुं नहीं भावा।''

दो ही उदाहरण पर्याप्त हैं, विचार और चिन्तन के लिए, हमारे विरोधी स्वभाव के शमन के लिए।

साकार रूप में शिव और उनका परिवार, उनके आयुध, सभी प्रतीक रूप में हमारे सामने एक विचार प्रस्तुत करते हैं, यह सकारात्मक विचार ही कल्याणकारी, मंगलकारी और सुख शांति के स्त्रोत के रूप मे हमें प्राप्त हुआ है, आइए विचार करें-

१. शिव का प्रधान अस्त्र है, त्रिशूल। त्रिशूल अर्थात इच्छा, ज्ञान और क्रिया रूपी मानवीय शक्ति। ये तीनों शक्तियाँ मिलकर ही कार्य को सिद्ध करती हैं, त्रिशूल का एक कोर ज्ञान है, दूसरा इच्छा और इसके बीच कर्म है यानि क्रिया। विचार कीजिए यदि ज्ञान है और इच्छा भी है, लेकिन कर्म न किया जाए तो क्या कार्य सिद्ध होगा। ज्ञान, कर्म और इच्छा के समन्वय से ही अपने समीष्ट को पाया जा सकता है। जब कि वर्तमान में मनुष्य का सही समीकरण बिगड़ा हुआ है, महाकवि प्रसाद की पक्तियाँ इस बिगड़ी अवस्था को भलीभाँति रेखांकित करती हैं।

ज्ञान दूर और क्रिया भिन्न हैं, इच्छा क्यूं हो पूरी मन की।
एक दूसरे से न मिल सके, यह विडम्बना है जीवन की।

२. शिव सच्चे अर्थों में पतित पावन हैं, भूत, पिशाच, नंग, धड़ंग अधम समझे जाने वाले गण शिव के संगी सभी हैं।

३. भगवान शिव नाट्य और संगीत के अधिष्ठाता हैं। शिव परिवार में सरगम के सातों सुर प्रतीक रूप में माने जाते हैं। षड्ज शिव है, ऋषभ पार्वती, गंधार गणपति तो मध्यम अन्यदि और पंचम हैं सिद्धि, त्रिशूल यहाँ दैवत का प्रतीक है, निषाद को नंन्दी माना गया है, इस तरह से सात सुर हैं। शिव १०८ प्रकार के नाटकों के प्रवर्तक माने जाते हैं जिसमें लास्य और तांडव भी है।

४. व्याकरण शास्त्र के 'अ इ उ म' जैसे सूत्रों के भी प्रणेता हैं शिव।

५. शिव का तीसरा नेत्र उनके संहारक और प्रलयकारी रूप को प्रकट करता है, इसी नेत्र को खोलकर उन्होंने काम देव को भस्म किया।

काम की ये अशुभ शक्तियाँ आज समाज में अधिक दिखाई देती हैं। असंतोष और काम भावना वर्तमान समाज और सभ्यता के संक्रामक रोग हैं। इनके नाश के

लिए शिव के इसी रूप की आवश्यकता है। सृष्टि का संचालन करने वाले परम तत्त्व के तीन रूपों में महेश ही शिव हैं। उनके प्रत्येक नाम में एक अर्थ अभिप्रेत है, वे दयालु और शीघ्र प्रसन्न होने वाले हैं, इसीलिए ''आशुतोष'' हैं। पशुपति इसलिए हैं कि सभी जीवधारियों के स्वामी के रूप मे उनकी कल्पना की गई है। देवादि देव, सभी देवताओं में श्रेष्ठ इसलिए ''महादेव'' हैं। समुद्र मंथन से उत्पन्न विष को अपने कंठ में धारण करने के कारण ''नीलकंठ'' हैं और इस विष का प्राशन कर के भी उसे पचा लिया इसलिए ''मृत्युंजय'' हैं। नृत्यकला के मूल प्रवर्तक होने के कारण ''नटराज'' हैं। मस्तक पर चन्द्र होने के कारण ''चन्द्रशेखर'' हैं। पिनाक नामक धनुष को धारण किया अतः ''पिनाकी'' हैं। शिव और विष्णु के समन्वित रूप के कारण ''हरिहर'' हैं।

शिव का प्रतीक शिवलिंग उनके निश्चय, ज्ञान और तेज का प्रतिनिधि है। शिव-पार्वती का विवाह शिव का शक्ति में विलय का प्रतीक है। इतना ही नहीं शिव यानि कल्याण और कल्याण के लिए ही शक्ति। शक्ति प्रयोग का इससे अच्छा उदाहरण और क्या हो सकता है। अणु शक्ति की अंधी दौड़ में ये भारतीय चिन्तन कितना प्रासंगिक है। शिवरात्रि शिव और शक्ति के पूर्ण समरस होने की रात्रि है।

शिव रात्रि के दिन शिव मंदिरों को सजाया जाता है, इस महोत्सव की भव्यता और दिव्यता का दर्शन इन मंदिरों और बारह ज्योतिर्लिंगों में प्रत्यक्ष होता है।

यह पर्व श्रद्धा और आस्था का पर्व है, शिव रात्रि का व्रत पाचन प्रक्रिया और आत्म शुद्धि का विधान है। पूजा और अर्चना मनः शांति और धैर्य का सोपान है और इन सब के लिए किसी बड़े आयोजन या कर्मकांड की भी आवश्यकता नहीं क्योंकि शिव सभी बन्धनों से मुक्त निर्गुण निराकार है, इस तत्त्व का बोध ही सच्ची शिव आराधना है, पुष्प दंता चार्य अपने शिव महिम्न-स्तोत्र में अनेक विधि शिवशंकर की स्तुति करने के बाद अन्त में कहते हैं।

तव तत्वं न जानामि,
क्री दृशाय महेश्वर।
या दृशाय महादेव,
ता दृशाय नमोनमः।

अर्थात हे महेश्वर, मैं आपका तत्त्व नहीं जानता, कि आप किस प्रकार के हैं। इसलिए हे महादेव आप जिस भी प्रकार के हैं उसी रूप और आकार में आपको हमारा बार बार नमस्कार।

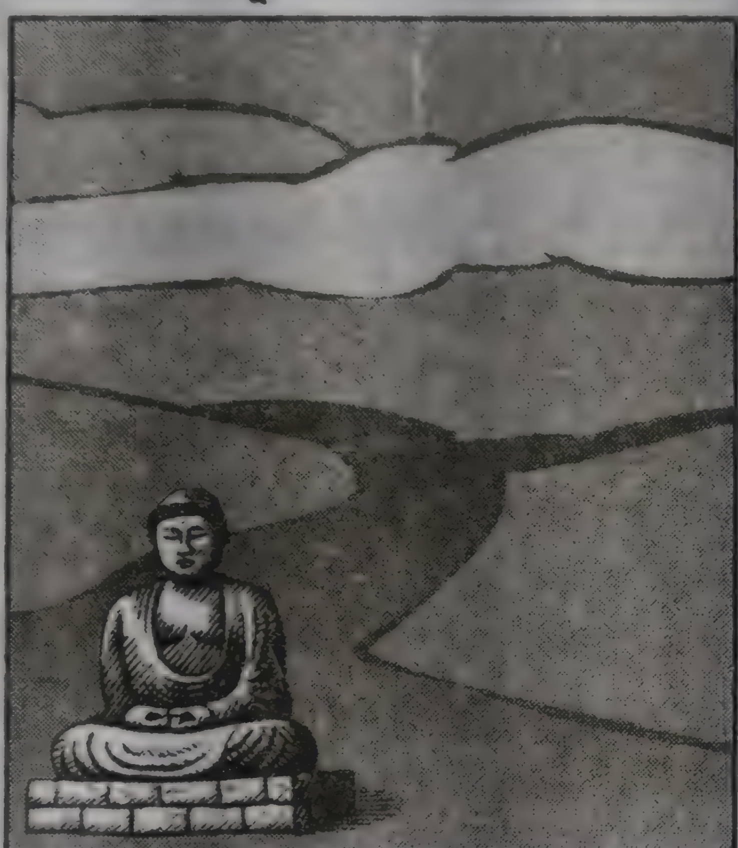
ओम् नमः शिवाय।



सत्य की राह

साधु टी. एल. वासवानी

"साँच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप" भारतीय चिंतन का यह एक मूलमंत्र है। सदा सत्य के पथ पर चलना तलवार की धार पर चलना होता है। इस राह पर चलने का प्रथम नियम है, अपने आदर्श व्यक्तियों की बताई हुई बातों का अक्षरशः पालन करना। नीत्झे नामक एक विचारक ने कहा है कि... सच्चरित्रता जीवन की सबसे बड़ी शत्रु है परंतु यही जीवन की आधारशिला भी है। इस विरोधाभासी विचार पर हमारी बुद्धि सहमत न हो परंतु हमारे ऋषियों ने सत्य की महिमा को कुछ यूँ परिभाषित किया है कि यह जीवन की वह उच्चावस्था है जहाँ से कई शुभ प्रस्फुटित होते हैं। सच्चरित्रता तो ज़िंदगी का हृदय है। यह जीवन की सच्चाइयों की जड़ को स्पर्श करती है। इसलिए प्राचीन गायकों ने इसकी स्तुति करते हुए कहा है कि इसका पालन करने से हमारी इन्द्रियों में पवित्रता और सात्विकता आती है, और हमारा नैतिक सिद्धांत दृढ़ होता है।



यही व्याख्या ब्रह्म उपनिषदों में भी कही गई है...ब्रह्मा के चरण कमलों की उपासना करने वाले साधक प्रार्थना करते हैं कि-मुझे ऐसी शक्ति प्रदान करें कि मैं कभी सत्य का दामन न छोड़ूँ, चाहे कितनी भी मुसीबतें आएँ, मैं कभी-सत्य से न डिगूँ।

महात्मा बुद्ध भी जब केवल्य ज्ञान को प्राप्त हुए थे तो वे सर्वप्रथम इसे दूसरों को बाँटने के लिए उद्यत हुए...वे चाहते थे कि इस भ्रमित विश्व का सर्वनाश होने से पहले ही मैं सत्य का मर्म समझाकर इसे बचाने की कोशिश करूँ। सत्य के इन तपस्वी साधकों को कई कठिन परीक्षाओं से गुज़रना पड़ा। कई अपशब्दों को सहा, पत्थरों की मार सही, सूली पर चढ़ाया गया, ज़िंदा जला दिया गया, फिर भी उन्होंने अपनी जान देकर भी सत्य की रक्षा की। ऐसे महान सत्यप्रेमियों ने ही सत्य के मार्ग को प्राचीन काल से ही अपने बलिदान से अमर बनाया है।

उपनिषदों ने यज्ञ की महिमा गाई

है, जिसका गूढ़ अर्थ है हमारे अंतर में जो आग जल रही है उसमें हमें अपने स्व की और अहंकार की आहुति निरंतर देते रहना चाहिए। इनमें सत्य को ईश्वर का ही एक स्वरूप माना है... एक शाश्वत सत्य ही एक शाश्वत रहस्य स्वरूप परमात्मा है...इसे तर्क द्वारा नहीं जाना जा सकता है। यह तो मन और आत्मा की श्रद्धा और विश्वास से अंतर की अनुभूति के रूप में महसूस किया जा सकता है। यह तो स्व को ईश्वर के चरणों में पूरी श्रद्धा व विश्वास से समर्पण के बाद मिलने वाला पवित्र और निर्मल प्रसाद है।

इस भाव-आराधना में कोई तर्क नहीं, कोई कर्मकांड नहीं सिर्फ़ श्रद्धापूर्ण संरक्षण प्राप्त करने की लालसा होती है। उस परम पावन जगत्पिता की असीम गरिमा का हमें कभी अंदाज़ भी नहीं हो सकता है। वह हमें न तो किसी प्रवचन के द्वारा या किसी ग्रंथ के वाचन से मिल सकता है, परंतु किसी विरले पर ही उनकी वह अक्षुण्ण कृपा अचानक ही बरसने लगती है,और जब उस पर ऐसी कृपा होती है तो वह एक परमानंद की अवस्था में स्वयं को सदैव महसूस करने लगता है। उसके अंदर एक अलौकिक सौंदर्य, सात्विकता और आश्चर्यजनक स्नेह धारा बहने लगती है।

क्षितिज के पार उसे एक ऐसे सत्य के दर्शनों का लाभ मिलने लगता है, कि वह अपने आराध्य के साक्षात दर्शन करने लगता है, उनसे संवाद सुलभ हो जाता है, उसके अंदर ऐसी उत्कृष्ट अभिलाषा जाग उठती है कि, मैं अब अपना अस्तित्व उस परमसत्ता के चरणों पर न्यौछावर कर...उसके द्वारा निर्मित इस सृष्टि के हर हृदय पर वार दूँ।

उस परमतत्त्व को जानने के लिए, उन्हें पाने के लिए बस उन्हें व्याकुल होकर पुकारना ही होता है। भक्त की एक करुण पुकार पर वे दौड़े चले आते हैं। जब-जब उन्हें किसीने पूरे दिल से पुकारा, वे दौड़े चले आए। हमारे मनीषियों ने कहा है: सत्य तो स्वयं ब्रह्मस्वरूप है, उसमें तनिक भी मिलावट नहीं होती। वह तो परमानंद स्वरूप है। अगर हम हमारे दैनिक जीवन में उस रस से वंचित हैं तो हम शायद सत्य की राह पर नहीं चल रहे हैं। सत्य हमारी आत्मा का भोजन है.. यह बुद्धि से परे है। यह तो अपनी आत्मा की पहचान की यात्रा है, जो बाहरी जगत से दूर अंदर की ओर गहरी, और गहरी उतरती है। यह एक रहस्यमय यात्रा है जो अपने उद्गम की ओर वापस लौटती है और अपने सृष्टिकर्ता के चरणों में स्वयं को पूर्ण रूप से समर्पित कर देती है। जैसे ही व्यक्ति इस सत्य से परिचित हो जाता है, वह सत्य को जीने लगता है। आज की इस दौड़ भाग भरी ज़िंदगी में सत्य की डगर ही हमें तनावमुक्त रख सकती है। उपनिषदों की प्राचीन प्रार्थना है हे ईश्वर! मुझे सत्य की राह पर चलने की शक्ति दो।

शेष पृष्ठ १६ पर

अनुभूतियाँ

जाको राखे गुरुदेव

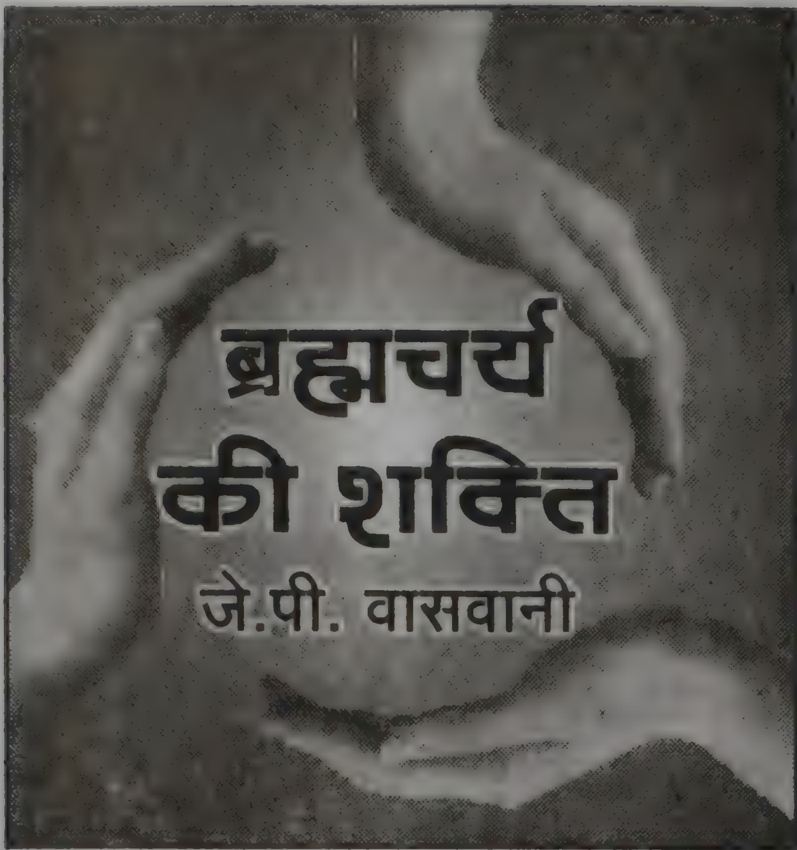
विनीत धरमानी 'सनी'

हमारा बचपन माता-पिता के साथ गुरुदेव की छत्र-छाया में गुज़रा। मिशन से हम तीनों भाई-बहन का कच्ची उम्र में ही गहरा आत्मिक बंधन बंध चुका था, जो आज युवावस्था में युवा संगठन में सक्रिय कार्यकर्ता का रूप ले चुका है। इसी संदर्भ में सौभाग्य से कभी दादाजी के दर्शन हो जाते और कभी उनके चरणों में बैठने का सुअवसर प्राप्त होता। उनकी बातें अंतर में बस जातीं और उनकी बताई राह पर चलने का संकल्प हर पल मन में दुहराया करते।

ज़िंदगी में कई बार मेरा सामना मृत्यु से हुआ, परंतु किसी दैवीय चमत्कार और दादाजी के आशीर्वाद के कारण मैं उसका ग्रास न बना।

एक बार मिशन के किसी कार्यक्रम में मुझे स्वयंसेवक बनाया गया था। मैं पिंपरी से अपने दुपहिया वाहन से मिशन की ओर निकला, परंतु रास्ते की व्यस्त सड़क के यातायात में कुछ ऐसा फँस गया कि, आगे जाने वाली मारूति कार के अचानक ब्रेक लग कर रुकने से उससे जा टकराया और सड़क के बीच गिर पड़ा। पीछे की वेन ने अचानक ब्रेक लगाए और मुझे लगा कि बस मृत्यु निकट है। अचानक वह वेन मुझसे कुछ कदम पर आकर रुक गई और मुझे मौत के मुँह में जाने से किसी अदृश्य शक्ति ने रोक लिया। आस-पास के लोगों ने मुझे उठाया, मेरे पैर में मामूली मोच आ गई थी, जो दो-एक दिन में ठीक हो गई। गाड़ी की भी थोड़ी टूट-फूट हो गई थी, परंतु जीवन की अमूल्य साँसें दादा के वरदान स्वरूप मेरे साथ थीं।

दूसरा जीवन दान मुझे कुछ दिनों पहले मिला, जब मैं घोरपड़ी में सेवा कार्य कर रहा था। मैं अपने कुछ साथियों के साथ उस क्षेत्र के कुछ बेघर लोगों को मिशन की तरफ़ से कंबल बाँट रहा था। जब मैंने एक अति वृद्ध सज्जन को अपने हाथों से कंबल ओढ़ाया तो उस बूढ़े बाबा ने मुझे दिल खोल कर आशीर्वाद दिया और मेरा हाथ पकड़ कर रोने लगा। जब हम सब एक अंधेरी गली से लौट रहे थे तो कुछ लोग साइकिलों पर आए और हमारा रास्ता रोकने लगे। खतरे को जान मैंने अपने दोस्त को समझदारी से चुपचाप गाड़ी निकाल लेने के लिए कहा। पीछे से उन्होंने कई वस्तुएँ फेंकीं लेकिन जिसके सर पर गुरु का हाथ हो वह भला कैसे जख्मी हो सकता है? कई बार सोचता हूँ कि दादा अगर उस घड़ी में हमें सद्बुद्धि देकर हमारी रक्षा नहीं करते, तो क्या मैं आज आपसे यह सब कह पाता? •



कई लोग अक्सर मुझसे यह प्रश्न करते हैं कि आप हमेशा मौन साधना करने का आग्रह क्यों करते हैं? आप कहते हैं एकांत में प्रभु का नाम जपो, उनका ध्यान करो। हम भरसक प्रयत्न करते हैं, परंतु मन कुछ ही क्षणों में भटकने लगता है, बताइए इसे कैसे काबू में करें? इसकी चंचलता पर कैसे लगाम लगाएँ?

कुछ अन्य लोगों की समस्या हैः- हम कई वर्षों से रोज़ सत्संग में आते हैं, परंतु आध्यात्म की राह पर हमें कोई प्रगति दिखाई नहीं देती... बताइए हम करें तो क्या करें?

अब आप ही बताइए कि आपकी ये समस्याएँ कैसे सुलझाऊँ? आपका शरीर यहाँ सत्संग में आता है, परंतु मन तो पता नहीं कहाँ कहाँ भटक रहा होता है। यह बेलगाम घोड़े की तरह कहीं दूर आपकी कल्पनाओं के सहारे उड़ता रहता है। आपके कानों के पर्दे से संतों के वचन, भजन, उपदेश टकराते रहते हैं, परंतु अगर अंदर नहीं उतरेंगे तो आध्यात्मिक प्रगति कैसे होगी?

मन को एकाग्र करने के लिए शरीर के अंदर की चेतना को जगाना होता है... यह अक्सर हमारे अंदर सुप्तावस्था में होती है। यह एक अनमोल शक्ति है...अक्सर हम इसे व्यर्थ ही गँवा देते हैं। कई-कई जन्मों तक यह सुप्तावस्था में पड़ी रहती है और हमारा यह स्थूल शरीर कई योनियों में भटकता रहता है। इस शक्ति के जागृत होने पर ही आप अंतर की गहराई में उतर कर एकाग्र हो पाएँगे।

हमारे आहार के एक हिस्से से हमारा रक्त बनता है। सौ रक्त की बूँदों से एक जीवन सत्व (Vital Fluid) बनता है। सौ जीवन सत्व की शक्ति से एक ओजस शक्ति का निर्माण होता है। अब आप जान गए होंगे कि यह ओजस या तेज कितना मूल्यवान है। इसे हम अपनी कामुकता के लिए एक क्षण में ही गँवा देते हैं। चूँकि इसका हम संग्रह नहीं कर पाते इसीलिए हम एकाग्र नहीं हो पाते।

संत चरणदास कहते हैं, चाहे मंदिर जाओ, सत्संग करो, यज्ञ करो, पाठ करो, परंतु अगर आप अपनी ओजस शक्ति या तेज को नहीं बचाते तो सब व्यर्थ है।

इसीलिए हमारे धर्म ग्रंथों में ब्रह्मचर्य व्रत को सर्वोपरि बताया है। जब तक हम अपने मन, वचन, कर्म को पवित्र नहीं बनाएँगे तब तक ब्रह्मचर्य का पालन नहीं कर पाएँगे।

एक लड़की थी, बहुत ही कुरूप। कोई भी उसकी तरफ़ आँख उठा कर नहीं देखता था। वह एक ऊँचे कुल की थी, पार्टियों में जाती थी। उसे विवाह कर घर बसाने की तमन्ना थी, परंतु उससे विवाह करने को कोई भी राज़ी नहीं था।

एक दिन उसने सोचा- इन पार्टियों में जाना व्यर्थ है। मेरा विवाह होना असंभव है। लोगों को मेरी कुरूपता नहीं भाती, हालांकि मैं भी तो उसी ईश्वर की संतान हूँ, जिसके ये सब हैं। मैं क्यों न अपना समय अब ईश्वर के चरणों में अर्पण करूँ! वह ईश्वर के सामने गाती है:-प्रभु तेरी याद है बड़ी सुखदाई।

तू ही है रखवाला अब मेरा,
तू ही है जग में मेरा सहाई।

ईश्वर भजन के साथ-साथ अब उसके मन में गरीबों ओर अपाहिजों के लिए भी करुणा जाग उठी। वह उनकी सेवा तन-मन से करने लगी। दृष्टिहीनों की सेवा में उसे विशेष संतोष होता, क्योंकि वे उसके शरीर की कुरूपता को देख नहीं सकते थे।

एक दिन एक युवक माता-पिता से कहता है-मैं इस लड़की से विवाह करना चाहता हूँ। बात आगे बढ़ती है। लड़की मन में सोचती है शायद उस लड़के ने मुझे ठीक से नहीं देखा होगा, वर्ना क्या ऐसा प्रस्ताव भेजता?

लड़का उससे आकर कहता है- मैंने तो तुम्हें ठीक से देखा है, तुमने ही स्वयं को नहीं देखा है...वह उसके हाथ में एक आईना रखता है। लड़की कुछ सालों से परसेवा में इतनी व्यस्त थी कि स्वयं को कभी दर्पण में देख ही नहीं पाई थी। आज उसने जब अपनी छवि देखी तो दंग रह गई...उसकी शक्ल बिल्कुल ही बदल गई थी। उसके सुंदर विचारों ने उसके चेहरे को भी सुंदर बना दिया था।

विचारों की शक्ति बड़ी प्रबल है, हम इसे व्यर्थ की बातों में ही गँवा देते हैं। अपवित्र विचारों के कारण कई बार हम कीचड़ में सने हुए सूअर की तरह, अपना जीवन तबाह कर लेते हैं। निचले चक्रों में निम्न योनि के प्राणी रहते हैं, चेतन होने पर वे ऊँचे चक्रों की तरफ़ उठते हैं और सचखंड में प्रवेश करते हैं।

आज की युवा पीढ़ी में शारीरिक आकर्षण ज़्यादा है, पहले ऐसा नहीं था। साधु वासवानीजी के मन में कोई कुविचार आता तो, दरवाज़ा बंद कर स्वयं को लाठियों से तब तक पीटते, जब तक कि उनका मन तौबा न कर ले। यदि कॉलेज में किसी कुविचार ने सताया तो अपने शरीर में गहरे तक एक पिन चुभा देते, जब शरीर और मन दर्द से तौबा करते, तब ही उसे वापस निकालते। अपनी तेज शक्ति को हमें हमेशा बढ़ाना चाहिए।

अगर आप बीमार हैं, डॉक्टर ने आपको दवाइयाँ दी हैं। परहेज़ भी बताया है। आप दवाइयाँ तो ले रहे हैं, परंतु परहेज़ नहीं कर रहे हैं...तो क्या मर्ज़ ठीक होगा?

इसी तरह आपकी आत्मा बीमार है, आप अपने गुरु के पास जाते हैं। गुरु शिक्षा देते हैं। साधना करने के लिए कहते हैं। आपकी ज़बान तो नाम जपती है,

परंतु मन की साधना नहीं कर पाते। अपनी शक्ति को व्यर्थ गँवाते रहते हैं। आपके मन के विकार आपको क्रोधी बनाते हैं। यही वासनाएँ हमारे अगले जन्म का कारण बनती हैं। एक व्यक्ति चौथी शादी के बाद मर गया, परंतु रोज़ रात को अपनी पत्नी को परेशान करने आ जाता था।

संत कबीर ने कहा है-एक कुत्ता भी अपनी शक्ति व्यर्थ गँवाने के बाद महीने भर तक पछताता रहता है। हम इंसान कब जागेंगे? हमारी चेतना कब जागृत होगी? अपनी शक्ति का संचय करो, यही आपको ऊपर उठाएगी। सात्विक आहार ग्रहण करें, कम खाएँ। ज़्यादा खाने से साधना नहीं होती। कहते हैं मनुष्य की मृत्यु के तीन कारण हैं-जल्दबाज़ी, चिंता और बदहज़मी।

१. जल्दबाज़ी करना व्यर्थ है, यह केवल तनाव बढ़ाती है। कार्य एक पूजा है। इसे मन लगा कर, प्रभु पर श्रद्धा रख कर इस तरह करो जैसे नदी का शांत जल धीरे बहता है।

२. चिंता आपको चिता की अग्नि में झोंक कर ही दम लेती है। यह तो एक अग्नि है, जो दिन रात आपका कलेजा काट-काट कर खाती रहती है। जब हमारा परमपिता हम सबका रक्षक है, तो फिर हम चिंता क्यों करें?

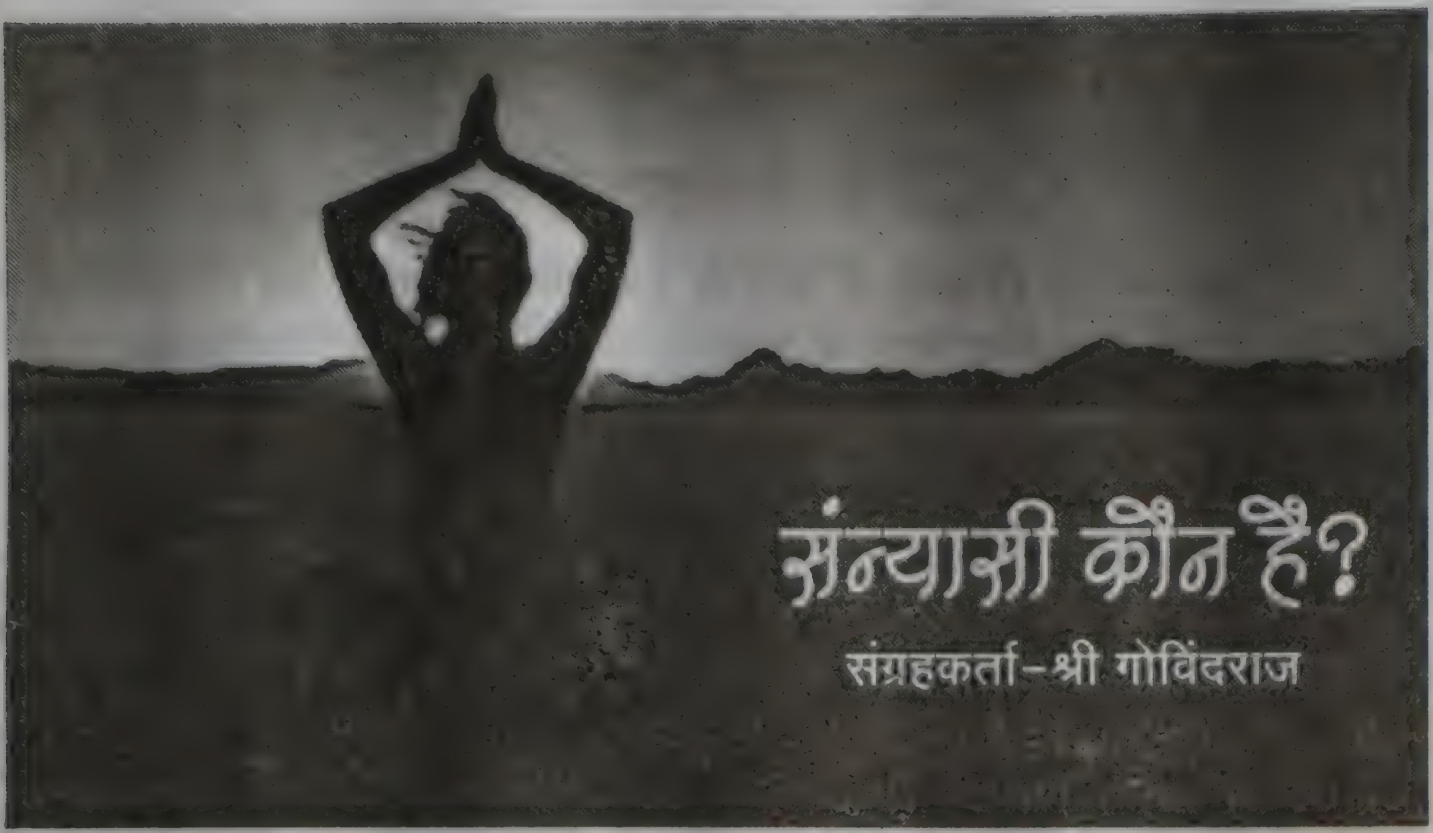
३. बदहज़मीः- पूरे विश्व में भूख से कम लोग मरते हैं, परंतु बदहज़मी से ज़्यादा। हमें उतना ही खाना चाहिए... जितना हम पचा सकें।

गुरुदेव कहते थे-जब तक हमारा अंतर साफ़ नहीं होगा, हमें सच्चा ज्ञान प्राप्त नहीं होगा। आइए प्रभु से प्रार्थना करें-मुझे निर्मल बनाओ, पवित्र बनाओ और मेरे तेज को ऊँचा उठाओ। ●

शेष पृष्ठ १२ का ◆ सत्य की राह

आज की संस्कृति में बाज़ारवाद हम पर हावी हो रहा है और हमारे जीवन को तनावों से भर रहा है। आदमी हो या औरत सभी इस बोझ के तले रोज़ दबे जा रहे हैं। उनके लिए केवल सत्य का मार्ग ही संतुलित जीवन जीने के लिए सबसे सरल उपाय है। सत्य ही उनकी इंद्रियों को पवित्र बना कर उनकी सारी परेशानियों को दूर कर एक सही राह पर ले जाएगा, जहाँ जीवन का पूर्ण सौन्दर्य है और संसार के सारे आश्चर्य संचित हैं। जिस तरह प्रकृति का शाश्वत नियम है कि जैसा आप सोचते हैं, महसूस करते हैं, वैसे ही आप होने लगते हैं ,और एक दिन आप उस चरम सत्य को पा लेते हैं...जहाँ हमारे परम पिता अपनी पूर्ण गरिमा के साथ, अभय के साथ हमारे जीवन को सुंदर बनाने के लिए उपस्थित हैं। ईश्वर की वह सौंदर्यपूर्ण छवि आपको अपनी ज़िंदगी में स्वयं के अंदर प्रवेश करती हुई दिखाई देने लगती है।

आप फिर सारे कष्टों से दूर एक शांति और आनंदपूर्ण जीवन को जीने लगेंगे। ●



संन्यासी सब ओर से आसक्ति हटा लेता है। उसका अपने मन और बुद्धि पर पूरा अधिकार होता है। वह इच्छा मात्र का त्यागी होता है। उसे नैसर्गिक सिद्धि प्राप्त होती है। उसके भगवा कपड़े बाह्य चिन्ह मात्र होते हैं। वह तो देह से अलग हो जाता है। वह तो जीते जी ही अपनी देह अग्नि को सौंप कर उसका रंग अपने गेरुए वस्त्र को धारण करता है।

वह विवेकी होता है और सोचता है कि एक दिन तो यह शरीर छोड़ना ही है, इस संसार से सारे सम्बंध टूटने ही हैं। यह शरीर तो सीमित समय के लिए किराये पर मिला है, समय पूरा होते ही मालिक की यह अमानत मालिक को सौंपनी होगी। तब फिर समय से पहले ही इससे आसक्ति हटा कर, हँसते हुए मालिक की चीज़ मालिक को सौंप कर, अपने असली घर का पता लगा लेते हैं ताकि इस मकान से निकल कर तुरंत ही वहाँ जा कर सुख से रह सकें।

संन्यासी सबको अपनी आत्मा मानते हैं। उनकी दृष्टि में अपने पराए का भेद नहीं होता। न उनका कोई मित्र होता है न कोई शत्रु। वे पारदर्शी होते हैं, उनके पास छिपाने की कोई बात नहीं होती। तीर्थ, मंदिर और नदियाँ तो बहुत समय के बाद पुण्य फल देती हैं, परंतु संन्यासियों के दर्शन से ही हम पवित्र हो जातें हैं। ज्ञानी संन्यासियों की सेवा सब पापों को नष्ट कर देती है।

संन्यासी समुद्र की तरह सर्वदा प्रसन्न और गंभीर रहते हैं। वे अथाह, अपार और असीम होते हैं। वे सदा परमात्मा में लीन रहते हैं। वे स्वयं को परमात्मा का दास समझते हैं। इस जीव का परमात्मा से एक ऐसा घनिष्ठ और अखंड संबंध, है जो कभी मिटता नहीं, बस बीच में एक विस्मृति का पर्दा आ जाता है, जिसे संन्यासियों की कृपा दृष्टि हटा देती है। संन्यासियों का चित्त सात्विक होता है, वे इसे ज्ञान, भक्ति, सत्कर्म, हरिकथा और सतसंग में लगाए रहते हैं। ●

करो सदा धन्यवाद

जे.पी.वासवानी

आज सुबह से ही मेरे अंतर में सिंध के एक पवित्र व महान संत की वाणी गूँज रही है। उन महान संत का नाम था सामी।

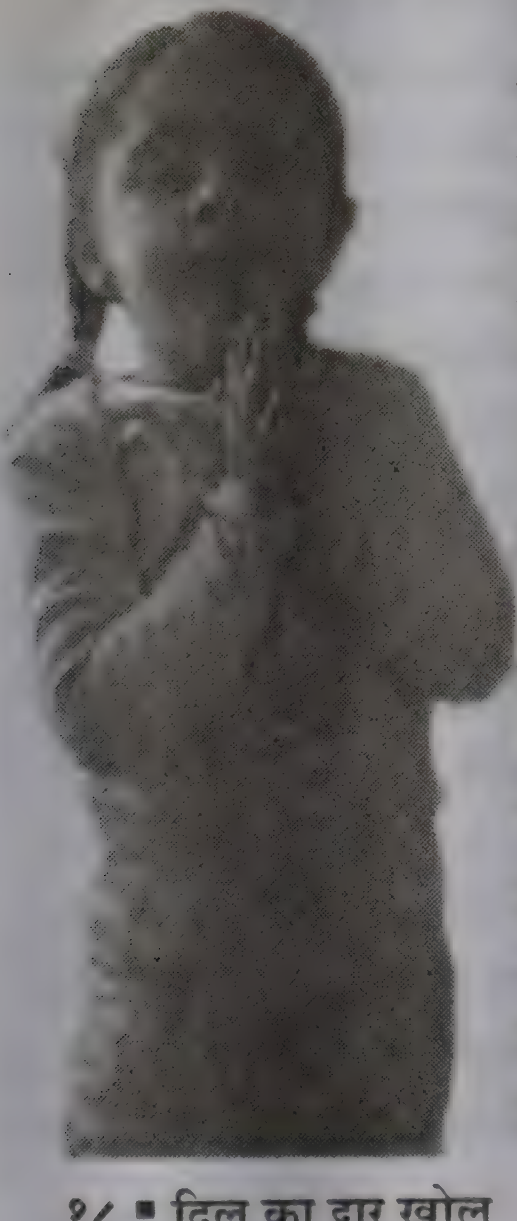
वे कहते हैं-

सदा कर शुक्र सामी उन दोस्तों का,
चाहे मिली सूखी रोटी या पूरी हलवा।

हर हाल में हमें खुश रह कर उस परमपिता का धन्यवाद करना चाहिए। ऐसा करने से हम सदैव चिंताओं से रहित और आनंदित रहेंगे।

आज हमारे जीवन में कितना तनाव है? अगर हमारी कोई इच्छा पूरी नहीं होती तो हम कितने बेचैन हो उठते हैं। हमें जो कुछ उस प्रभु की कृपा से मिला है, उसका सदा आभार मान कर धन्यवाद करना चाहिए, जो नहीं मिला उसके प्रति शिकायत नहीं करनी चाहिए। वे तो हर पल हमारा कल्याण करने वाले पिता हैं, उन्हें मालूम है कि किस चीज़ में हमारा हित है, और किस चीज़ में अहित।

एक बहन ने एक बार मुझ से रोते हुए कहा:-मैं और मेरे पति बीस वर्षों तक आनंद से रह रहे थे, हमारा घर एक प्रेम से भरा हुआ स्वर्ग था। एक दिन उन्होंने ऑफिस से चार बजे फ़ोन किया कि...मैं पंद्रह मिनट में घर पहुँच रहा हूँ। मैंने एक डेढ़ घंटे तक इंतज़ार करने के बाद उनके ऑफिस में फ़ोन लगाया तो मालूम हुआ कि उन्हें दिल का दौरा पड़ा था, और अस्पताल ले जाते हुए उनकी रास्ते में ही मृत्यु हो गई।



ऐसी है यह दुनिया। यहाँ अगले पल की भी खबर नहीं है कि क्या होने वाला है? इसीलिए हमें हर पल के लिए उसका आभारी होना चाहिए।

एक बहुत ही गरीब व्यक्ति था जिम। वह हमेशा फटेहाल अवस्था में ठीक बारह बजे रोज़ चर्च में आता, और थोड़ी देर बैठ कर चला जाता। पादरी को शंका होती है कि कहीं यह चर्च की किसी मूल्यवान वस्तु को चुराने के इरादे से तो नहीं आता।

आखिर एक दिन पादरी उससे पूछ ही लेता है...तुम रोज़ बारह बजे किस इरादे से यहाँ आते हो? जिम:- मैं तो यहाँ रोज़ प्रार्थना करने के लिए आता हूँ, क्यों ?

पादरीः- तुम तो केवल एक दो मिनट ही ठहरते हो, क्यों?

जिमः- हाँ मेरी प्रार्थना बहुत ही छोटी है...मैं प्रभु से कहता हूँ-मैं अपने वायदे के अनुसार आज भी बारह बजे तेरे चरणों में अपना सर झुकाने आया हूँ।

जिम के साथ एक दिन दुर्घटना हो जाती है। वह अस्पताल में भर्ती हो जाता है। उसे असह्य वेदना होती है, फिर भी वह सदैव मुस्कराता रहता है, उसके होठों से आह के बजाय ईश्वर का शुक्रिया ही निकलता है। वह जिस वार्ड में था वहाँ के मरीज़ पहले काफ़ी उद्दंड थे परंतु उसके संसर्ग में वे अब न अपशब्द कहते थे, न कुहराम मचाते थे। एक नर्स ने जब उनके इस बदले हुए व्यवहार का राज़ पूछा तो उन्होंने कहा...जब से जिम आया है...हम हैरान हैं कि इतने दर्द में भी वह कितना आनंदित रहता है। उसे देख कर हम सब भी अपने अवगुणों को त्याग कर भले बनने का संकल्प ले चुके हैं।

नर्स ने जिम से पूछा कि तुम हमेशा इतने प्रसन्न कैसे रहते हो?... तो जिम कहता हैः-यह जो मेरे पास कुर्सी रखी है , इस पर मेरे प्रभु रोज ठीक बारह बजे आकर बैठ जाते हैं और कहते हैं... लो जिम! मैं ठीक बारह बजे तुम्हारे पास आ गया हूँ। पहले तुम मेरे पास रोज़ आते थे, अब जब तुम असमर्थ हो तो मैं ही तुम्हारे पास रोज़ आऊँगा।

ऐसे ही करुणा के सागर हैं वे। उन्हें हर पल हमारा खयाल है। हम ही हैं जो सदैव उचित-अनुचित माँगों की तराज़ू पर उन्हें तोलते रहते हैं।

गुरुदेव साधु वासवानी शुक्र शब्द की व्याख्या करते हुए कहते थे कि यह... श-क-और- र -शब्द से बना है। श से होता है शहंशाह... अर्थात राजाओं का राजा...आप चाहें तो इसे राम कहें, श्याम कहें, परवरदिगार कहें या अपना मालिक कहें। क...का अर्थ है करें... वे जो भी करें, जैसा भी करें...हमारे मालिक हैं...उन्हें पूरा अधिकार है, हमारे साथ कुछ भी करने का। और -र - का अर्थ है राज़ी होना, उसकी हर मर्ज़ी में आप राज़ी हों...कोई शिकायत न करें।

हम बड़े ही लालची लोग हैं, अगर हमारे साथ कुछ अच्छा होता है तो, हम ईश्वर पर अपने कई जन्म कुरबान करने को उतावले हो जाते हैं, उसकी दयालुता की स्तुति करने लगते हैं। और अगर कभी हमारा कुछ नुकसान हो गया तो हम उसकी निंदा करने लगते हैं, उसे क्रूर और निर्दयी कह कर कोसने लगते हैं। हमारी सारी श्रद्धा, हमारा सारा विश्वास पल भर में कपूर की तरह उड़ जाता है।

श्रीकृष्ण ने गीता में योग का ज्ञान देते हुए कहा है कि... हे अर्जुन...योग का अर्थ है मिलन... हम अपने अंतर में बैठे परमपिता से विलग हो गए हैं...इसीलिए कष्टों को भोग रहे हैं। योग का गूढ़ अर्थ है...ईश्वरीय सत्ता से जुड़ जाना और इस संसार में स्थितप्रज्ञ हो जाना। जो व्यक्ति सुख-दुःख, हानि-लाभ, मान-अपमान में सदैव संतुलित रहता है वही मेरा प्रिय परम भक्त है। वह जीवन की

हर घटना को प्रभु का प्रसाद समझ कर स्नेहपूर्वक ग्रहण करता है।

आपको अपने मित्र के यहाँ भी तो कभी स्वादिष्ट व्यंजन मिलते हैं, और कभी सिर्फ़ पानी। जब आप गुरुजी के चरणों में जाते हो तो वे कभी गले से लगा लेते हैं और कभी अपनी कुटिया के द्वार बंद कर लेते हैं, इसके बावजूद भी आप न तो व्यथित होते हैं और न ही फिर वहाँ कभी न जाएँगे ऐसा प्रण करते हैं।

एक बार एक भक्त को व्यापार में एक ही दिन में तीन करोड़ का नुकसान हुआ तो उसने उसी शाम अपने मित्रों को एक शानदार दावत दी। मित्रों ने आश्चर्य से पूछा-अरेऽऽ आज ही तुम्हारा इतना बड़ा नुकसान हुआ है, और तुम हो कि बड़े ही प्रसन्न मन से दावत दे रहे हो...उसने कहा-हाँ घाटा तो हुआ है परंतु शुक्र है उस खुदा का कि...मेरे पास अभी भी उसने कुछ करोड़ बचे रहने दिए। उसी का शुक्रिया अदा करने के लिए मैंने आप सभी को दावत पर बुलाया है।

किसी दार्शनिक ने अपने लेख में लिखा था कि आज मनुष्य ईश्वर को अपना मालिक न मान कर अपना दास समझता है...वह ईश्वर की मर्ज़ी में राज़ी न होकर, उससे अपनी मर्ज़ी पूरी करवाना चाहता है...उसे अपनी मर्ज़ी से चलाना चाहता है। दिन रात उससे कुछ न कुछ माँगता ही रहता है। इच्छा पूरी न होने पर क्रोध करता है।

आज हमारे पास इतना कुछ होने पर भी शांति नहीं है, हमारा मन प्रसन्न नहीं है, हम संतुष्ट नहीं हैं।

हम उसके आशीषों को भूल जाते हैं, उसकी कृपाओं को याद नहीं करते। चाहे हम किसी भी हाल में हों हमें जीवन को सकारात्मक रूप में देखना चाहिए।

एक बार महान साध्वी राबिया कहीं से गुज़र रही थी कि अचानक एक बड़ा पत्थर उसके हाथ पर आ गिरा। उसके हाथ पर बड़ा ज़खम हो गया, फिर भी वह मुस्कराते हुए कह रही थी...हे प्रभु तेरा धन्यवाद है कि तूने मेरा दूसरा हाथ सही सलामत रखा, ताकि मैं अपने सारे कार्य स्वयं ही कर सकूँ। ईश्वर के प्रति कितनी गहरी श्रद्धा है। वे तो परमपिता हैं, क्या कभी किसी का बुरा करेंगे। ये तो हमारे ही कर्मों का लेखा-जोखा है। हमारी ही झोली में पहले से सुराख हैं...अतः उसकी कृपा नहीं ठहरती है।

मेरे गुरुदेव भी अपने जीवन के अंतिम समय में बड़ी कठिन पीड़ा से ग्रसित थे, परंतु उनके चेहरे पर सदा मुस्कान और होठों पर प्रभु का नाम रहता था।

एक बार एक सज्जन मेरे पास आकर कहने लगेः-मैं तो अपने घर से भाग जाना चाहता हूँ...मेरा मन एक पल भी वहाँ रहने को नहीं करता। मैंने पूछाः-क्यों? तो वे बोले-मेरी पत्नी बड़े विचित्र स्वभाव की है...पहले तो पूछती है...क्या खाओगे? और फिर बनाती है...ठीक उसका उल्टा। मैं तो सोचता

हूँ...एक दिन आत्महत्या ही कर लूँ।

मैंने उसे समझाया...देखो गुरुदेव के वचनों पर ध्यान दो-ऐ दिल न कर फिक्र-कर शुक्र, कर शुक्र। बस उस दिन से पत्नी के प्रति उसकी भावना ही बदल गई...जो मिला उसे प्रभु का प्रसाद समझ कर खाने लगा। एक दिन अंदर कहीं आवाज़ सुनाई दी...मूर्खराज! जब जानते हो कि पत्नी तुम्हारे कहने का उल्टा करती है तो तुम भी उल्टा बोलो..सारी चीज़ें फिर सही हो जाएँगी। जैसे जिस दिन तुम्हें भिंडी खानी हो तो कहो...आज तुम जो चाहो बनाना...परंतु भिंडी बिल्कुल भी मत बनाना और सच शाम को भिंडी तैयार थी।

हाँ ...शुक्रिया करने का यह अर्थ नहीं है कि आप पुरुषार्थ न करें। पुरुषार्थ अवश्य करें परंतु जो भी नतीजा हो उसे सहर्ष स्वीकार करें। हर भक्त में सब्र, शुक्र, धीरज और ध्यान ये चार गुण होना अत्यंत आवश्यक हैं। ●



बात ज़रा सी

कोई न रहेगा इस दुनिया में,
एक दिन तो सबको यहाँ से जाना है।
फिर काहे का रंज करें यहाँ,
क्या खोना क्या पाना है?
लाए नहीं थे साथ कुछ,
और साथ नहीं कुछ जाना है।
बस साँसो की डोर मिली है,
उसका ही ताना बाना है।
एक दिन जब टूटेगी डोर
सब कुछ यहीं रह जाना है।
बस बात यह ज़रा सी,
हमें खुद को ही समझाना है।

लाल जादवानी
२, राजमहल कॉलोनी,
इंदौर (म.प्र.)

प्रेरक प्रसंग



क्या वह तुम्हारे दान का पात्र है?

अरस्तू अपने कुछ दोस्तों के साथ टहल रहा था। एक गरीब आदमी ने उन्हें सम्बोधन करके भिक्षा के लिए अनुनय की। वह आदमी बदनाम था।

अरस्तू ने उस गरीब को भिक्षा दी। उसके मित्रों को यह बात पसंद नहीं आई।

उनमें से एक ने अपना विचार प्रकट करते हुए कहा, तुम्हें उसकी मदद नहीं करनी चाहिए थी, तुम्हें उसके नाम के बारे में पता है। तुम ऐसे लोगों को बढ़ावा क्यों देते हो?

महान दार्शनिक ने समझा कर कहा, मैंने उस व्यक्ति को दान नहीं दिया, मैंने मानवता को दिया है। ज़रूरतमंदों की पात्रता को जाँचने वाले हम कौन हैं?

सच्चा रिश्ता

महान विक्टोरियन कवि, लार्ड टैनिसन अपने बगीचे में चहल कदमी कर रहे थे।

उनके साथ एक मित्र था। दोनों की बातचीत में तरह-तरह के विषयों पर चर्चा हो रही थी और हर विषय पर महाकवि उचित उत्तर, ठीक टिप्पणी व बुद्धिपूर्ण कथन करते रहे।

अचानक दोस्त ने पूछा, ''जीसस के बारे में आपका क्या विचार है?''

एक सुन्दर फूल पर झुकते हुए और उसे प्रेम से छूते हुए आह भर कर बोले-ओह, एक सूरज का जो फूल से रिश्ता है, वही रिश्ता जीसस का मेरी आत्मा से है।

क्षमा करो और भूल जाओ

क्लारा बार्टन, अमेरिकी रेड क्रास सोसायटी की संस्थापक अपनी एक पुरानी सहेली को मिली। पिछली बातें एक दूसरे को याद कराते हुए उस सहेली ने क्लारा को एक बुरी घटना की याद दिलाई-एक ऐसी क्रूर घटना जिसने वर्षों पहले क्लारा को बड़ा दुखी किया था। लगता था, क्लारा को वह याद नहीं आ रही थी।

सहेली ने हैरानी से पूछा, ''क्या तुम्हें वह घटना याद नहीं आ रही?'' क्लारा का जवाब था, ''नहीं, मुझे अच्छी तरह याद है कि मैं उस घटना को भूल चुकी हूँ।'' •

प्रश्नोत्तर

सवाल आपके, जवाब दादा के

यदि कोई व्यक्ति अपने अतीत में की गई गलतियों पर पश्चात्ताप करे और आँसू बहाए परंतु वह आगे ऐसा क्या करे कि वह ऐसे अनुभवों से फिर न गुज़रे ?

हमारे अंदर पश्चात्ताप की भावना भीतर से होनी चाहिए। दिल से किया गया पश्चात्ताप ज़िंदगी को यू टर्न (U Turn) देता है।

(U Turn) लेने के बाद अपने गलत कार्य का हर्जाना भर देना चाहिए और वह गलती दुहरानी नहीं चाहिए। अक्सर लोग रोते हैं, पश्चात्ताप करते हैं, क्षमा माँग लेते हैं, और थोड़े दिनों के बाद सब भूल कर गलतियाँ करने लगते हैं।

इसलिए हमें हमेशा प्रभु से दो वरदान माँगने चाहिए-पहला ज्ञान और दूसरा शक्ति।

ज्ञान के द्वारा सही और गलत की पहचान होगी। ये दोनों ही मनुष्य के लिए ज़रूरी हैं। ज्ञान के बिना शक्ति अधूरी और निरंकुश होती है, और शक्ति के बिना ज्ञान पंगु होता है।

श्रीकृष्ण ने गीता में कहा है कि-मेरी शरण में आओ, तो मैं तुम्हें मुक्त कर दूँगा। इसके बावजूद भी लोग शिव, ब्रह्मा आदि देवताओं की पूजा क्यों करते हैं?

श्रीकृष्ण ने गीता में यह कहा है कि जिन्हें सांसारिक चीज़ों की इच्छा हो वे देवी देवताओं की पूजा करें क्योंकि वे लोगों की मनोकामना शीघ्र पूरी करते हैं।

इस संसार में हमारी कई तृष्णाएँ होती हैं, जिन्हें पूर्ण करने के लिए हम देवताओं की पूजा करते हैं, हार फूल चढ़ाते हैं, प्रसाद चढ़ाते हैं, मन्नत माँगते हैं।

लेकिन जब हमारे अंदर ज्ञान जागता है, और हम तृष्णाओं से मुक्त हो जाते हैं, फिर हमें इन्हें पूजने की आवश्यकता नहीं पड़ती।

हम अपने अहं को ईश्वर के चरणों में कैसे अर्पित करें?

सबसे पहले हमें यह ज्ञात होना चाहिए कि हमारा अहं एक ऐसा चोर है, जो हर रोज़ हमारे जीवन का अनमोल खज़ाना लूट रहा है। जब हमारे अंदर किसी क्षण ऊपर उठने की प्यास जागेगी, तो हम इस चोर से सावधान होने लगेंगे। जब हम ईश्वरीय ध्यान में बैठेंगे तो हम इस खोखले अहंकार के महत्त्व को समझ कर, धीरे-धीरे इसके चंगुल से मुक्त हो जाएँगे। ●

हँसी का खज़ाना

• **पत्नी ने अखबार पढ़ते हुए कहा** – सुनो जी, अखबार में खबर छपी है कि एक व्यक्ति ने अपनी पत्नी को साइकिल के बदले में बेच दिया, कहीं तुम तो ऐसा नहीं करोगे?

पति ने कहा – मैं इतना मूर्ख थोड़े ही हूँ, मोटर साइकिल से कम बात नहीं करूँगा।

• **सिपाही** – यह गाय और बछड़ा किसका है?

लड़का –गाय का तो मुझे पता नहीं, यह बछड़ा किस का है मैं अच्छी तरह से जानता हूँ।

सिपाही –किस का है?

लड़का–जी, गाय का।



• **मेहमान(बच्चे से)**– बेटे,तुम किस दिन पैदा हुए थे?

बच्चा –बुधवार को और आप?

मेहमान – रविवार को।

बच्चा –आप झूठ बोलते हैं, रविवार को तो छुट्टी होती है।

• **एक वृद्ध अध्यापिका** –मैं जवान हूँ, कौन सा काल है?

छात्र – जी, भूतकाल।

• **यात्री(ताँगेवाले से)** –भइया, लाल किले के कितने पैसे लोगे?

ताँगेवाला –साहब माफ़ करना, मैं लाल किला नहीं बेच सकता। वह सरकारी सम्पत्ति है।

• एक यात्री रेलगाड़ी में सामान रखने की जगह पर सन्दूक ऊपर रखने लगा तो नीचे सीट पर बैठी मोटी महिला ने कहा, ''इसे किसी और जगह रखिए, नहीं तो मेरे सिर पर गिर पड़ेगा।''

यात्री लापरवाही से बोला, ''चिन्ता मत कीजिए, इसमें टूटने वाली कोई चीज़ नहीं है।''

• एक समय दो मूर्ख गाड़ी में यात्रा कर रहे थे, रात होने वाली थी।

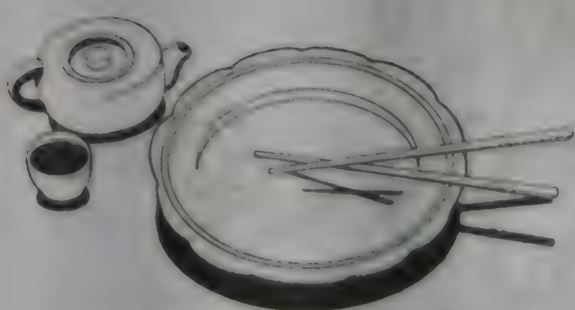
पहला मूर्ख – क्यों भई, ये पेड़ इतनी तेज़ी से पीछे क्यों भागे जा रहे हैं?

दूसरा मूर्ख – रात होने वाली है, अपने घर जा रहे हैं।

• **चाय पीते हुए एक ने बैरे से कहा** – बैरा, एक डबल रोटी का पीस लाना।

बैरा –और कुछ साहब।

ग्राहक –हाँ एक पेपरवेट भी लाना, पहला पीस हवा में उड़ गया था। ●





इंडो चायनीज़ कीव

सामग्री (कीव के लिए)- ३ आलू,२५ ग्राम पनीर, २ ब्रेड स्लाइस, १ हरी मिर्च, १ बड़ा चम्मच अरारूट,स्वादानुसार नमक, काली मिर्च।

३ कप नूडल्स उबले, २ बड़े चम्मच गाजर किसी, २ बड़े चम्मच पत्तागोभी किसी, ४ बड़े चम्मच मटर के दाने, २ बड़े चम्मच शिमला मिर्च किसी, १ बड़ा चम्मच सिरका, स्वादानुसार नमक, काली मिर्च।

विधिः-आलू, मटर व नूडल्स अलग-अलग उबाल लें, ब्रेड स्लाइस व मसाले मिलाएँ। पैन में एक छोटा चम्मच तेल गर्म कर पत्तागोभी, गाजर, मटर भूनें। दो मिनट बाद नूडल्स, शिमला मिर्च, सिरका, नमक, काली मिर्च मिलाएँ। मसाला ठंडा करें। पीठी के रोल्स बनाकर हथेली पर दबाकर लंबा फैलाएँ। भरावन को भी फैलाकर रखें और सावधानी पूर्वक बंद कर गर्म तेल में बादामी होने तक तलें।

टमाटरी कचौड़ी

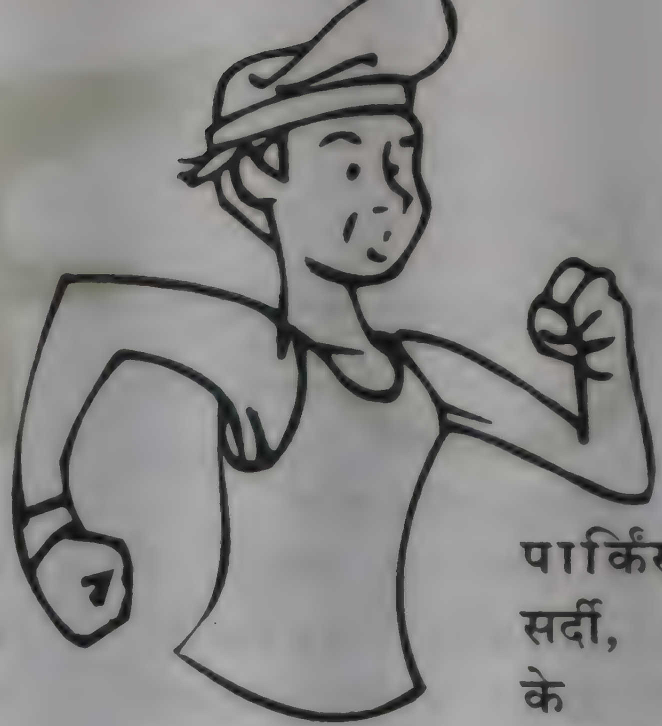
सामग्री- कचौड़ी के आटे के लिए २-२ कप आटा बेसन सूजी, ३/४ छोटा चम्मच नमक,तेल।

मसाले के लिएः-१०० ग्राम टमाटर, १ तेजपत्ता, २ लौंग, ६ काली मिर्च, ४ लहसुन, २५ ग्राम प्याज़, ज़रा सा टुकड़ा अदरक, स्वादानुसार नमक।

भरावन के लिएः- २ कप मटर, आधा-आधा कप पत्ता गोभी, गाजर, २ हरी मिर्च, १ चुटकी जीरा पाउडर, एक छोटा चम्मच लाल मिर्च, १ छोटा चम्मच धनिया पाउडर, आधा छोटा चम्मच गरम मसाला, १ चुटकी टाटरी, १ बड़ा चम्मच बेसन, स्वादानुसार काला, सफ़ेद नमक।

विधिः- टमाटर काट लें और कुकर में मसाले की सारी सामग्री व टमाटर डालकर एक सीटी लगा लें। कचौड़ी के आटे की सारी सामग्री मिलाएँ और छने रस से आटा गूंथें। चिकनाई लगाकर १५-२० मिनट के लिए ढककर रखें। एक पैन में तेल गर्म कर जीरे का छौंक दें। लाल मिर्च, धनिया, मटर व दोनों नमक डालें। मटर के हल्का नर्म रहने पर पत्तागोभी, गाजर मिलाएँ। फिर दो-तीन मिनट बाद हरी मिर्च, गरम मसाला, टाटरी मिलाकर बेसन मिला दें। आटे के पेड़े बनाकर उनमें भरावन डालें। बंद कर हाथ से कचौड़ी का आकार दें और तलें। •

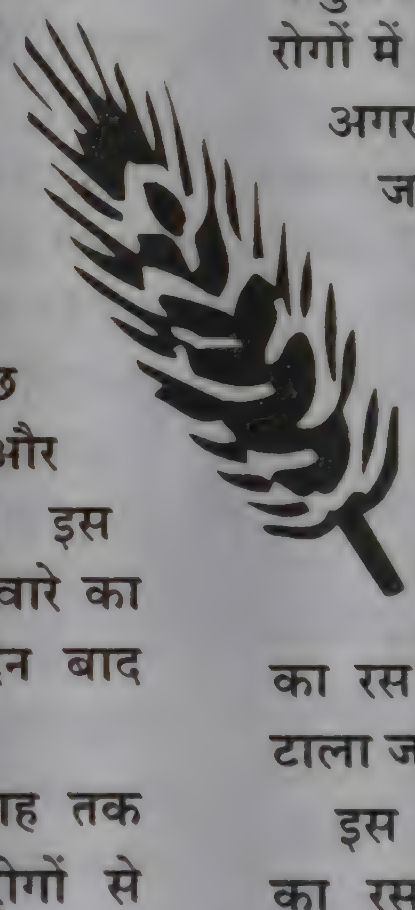
स्वास्थ्य



गेहूँ के ज्वार का रस

आधुनिक वैज्ञानिक खोजों ने यह पुष्टि की है कि गेहूँ के ज्वार के रस में अनगिनत चमत्कारिक गुण हैं।

यह एक जैसे आठ गमलों में शुद्ध मिट्टी भर कर एक-एक दिन क्रमशः गेहूँ के दानों को डाल कर छोटे-छोटे पोधे तैयार करने की क्रिया है। मिट्टी में कंपोस्ट खाद या गोबर भी मिलाया जाता है। रोज़ गमलों में पानी डालें और तीन चार घंटे उन्हें धूप में रखें। आठवें दिन पहले गमले के जवारों को काट लें और उन्हें स्वच्छ पानी से धो कर पीस लें और इस दिव्य रस का पान करें। इस तरह रोज़ एक गमले के ज्वारे का प्रयोग करें और आठ दिन बाद पहले से शुरुआत करें।



यह प्रयोग एक दो माह तक लगातार करने से कई रोगों से मुक्ति मिल कर तन और मन निरोग हो जाते हैं।

गेहूँ के ज्वारों का रस अगर आप नियमित रूप से प्रयोग करेंगे तो आपको हर प्रकार के चर्मरोग, मानसिक, शारीरिक, मूत्राशय, पथरी, कब्ज़, डायबिटिज़, हृदय रोग, संधियों तथा स्नायुओं के रोग, पार्किंसन्स, सर्दी, बालों के रोग, स्त्रीरोग, कान व आँखों के रोग, अनिद्रा, पांडुरोग, कैंसर, नकसीर आदि रोगों में चमत्कारिक लाभ होता है।

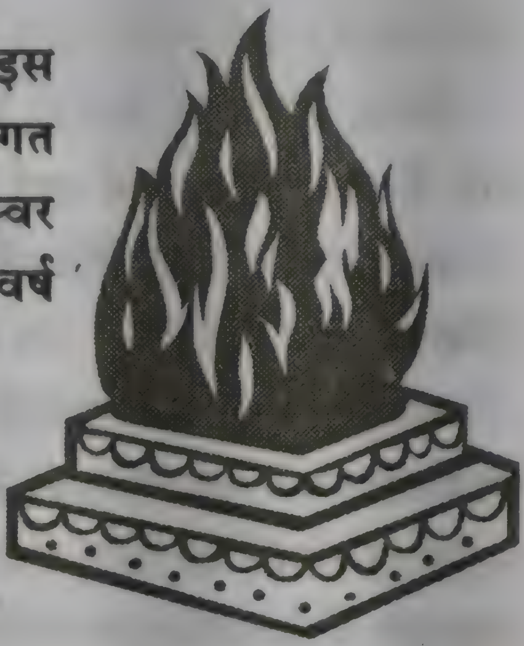
अगर ज्वारों को चबा कर खाया जाए तो मसूड़े मज़बूत होते हैं और पायरिया रोग से मुक्ति मिलती है। यदि गेहूँ चार चम्मच और मेथीदाना एक चम्मच रात्रि को भिगो कर, इसके जल के साथ ज्वारे का रस पीएँगे तो वृद्धावस्था को टाला जा सकता है।

इस जल में आप आधा नींबू का रस, एक चुटकी सौंठ का पाउडर और दो चम्मच शहद मिला कर लेंगे तो यह एक स्वास्थ्यवर्धक पौष्टिक टॉनिक का काम करेगा। इसमें विटामिन ई, सी और अन्य तत्त्व रहने से यह एक संजीवनी औषधी का रूप धारण कर लेता है। यह एक कायाकल्प करने वाली अमृतधारा है। ●

साधु वासवानी साधना शिविर

सन एंड-सैंड होटल शिरडी

जिस तरह दिन भर के थके मांदे जीव शाम को अपने आश्रयस्थल पर पहुँच कर स्वर्गीय सुख का अनुभव करते हैं, उसी तरह सत्ताईस से उनतीस दिसम्बर तक दादा के कई भक्त देश-विदेश के कोने-कोने से गुरु रूपी माँ की वात्सल्यमयी गोद में चिरशांति पाने पहुँच चुके थे। यह आयोजन शिरडी के सन-एंड-सैंड होटल में किया गया था।



साधु वासवानी परिवार की स्वागत समिति ने इस पवित्र धरती पर हर आगंतुक का हार्दिक स्वागत किया। संपूर्ण कैंप में भजन व कीर्तन की मधुर स्वर लहरियों ने बीते वर्ष की विदाई और आने वाले वर्ष का स्वागत करते हुए सद्गुरु से आशीर्वाद माँगा। आत्मिक रूप से तृप्त होकर सब ने भोजन के बाद कुछ विश्राम किया। अच्छे स्वास्थ्य पर डॉक्टरों ने भाषण दिया और कुछ लोग साँई बाबा के चरणों में अपनी श्रद्धा अर्पित करने पहुँचे।

शाम को एक बार फिर उत्साहपूर्ण संगीत गूँज रहा था, सभी सहभागियों का स्वागत करते हुए हवन की शुरुआत की गई। इसी अवसर पर दादाजी ने अखंड ज्योति भी प्रज्वलित की जो शिविर के अंत तक जल रही थी। इसके बाद आरती और नूरी वचन का वाचन किया गया।

परम-पूज्य साधु वासवानीजी के अमर वचनों का प्रसार तीनों दिन चलता रहा। गुरुदेव ने बताया कि जिज्ञासु भक्तों को अपने जीवन में दस पायदानों पर चढ़ना पड़ता है। उनमें से प्रथम है जीवन की राह पर एक दिन अचानक उसके अंदर सजगता आ जाती है...उसका हृदय उस परमपिता को पुकार उठता है और वह इन सांसारिक बंधनों से मुक्त होकर उनको पाना चाहता है। यह होती है प्रथम पायदान।

दूसरी पायदान पर उसके हृदय में पश्चात्ताप उठने लगता है वह पछताने लगता है कि प्रभु! अब तक मैं किस तरह आपसे इतना दूर रहा, मुझे माफ़ करना कि अब तक का जीवन मैने व्यर्थ ही गँवाया।

तीसरी पायदान पर उस जिज्ञासु भक्त के हृदय में परमपिता परमेश्वर के

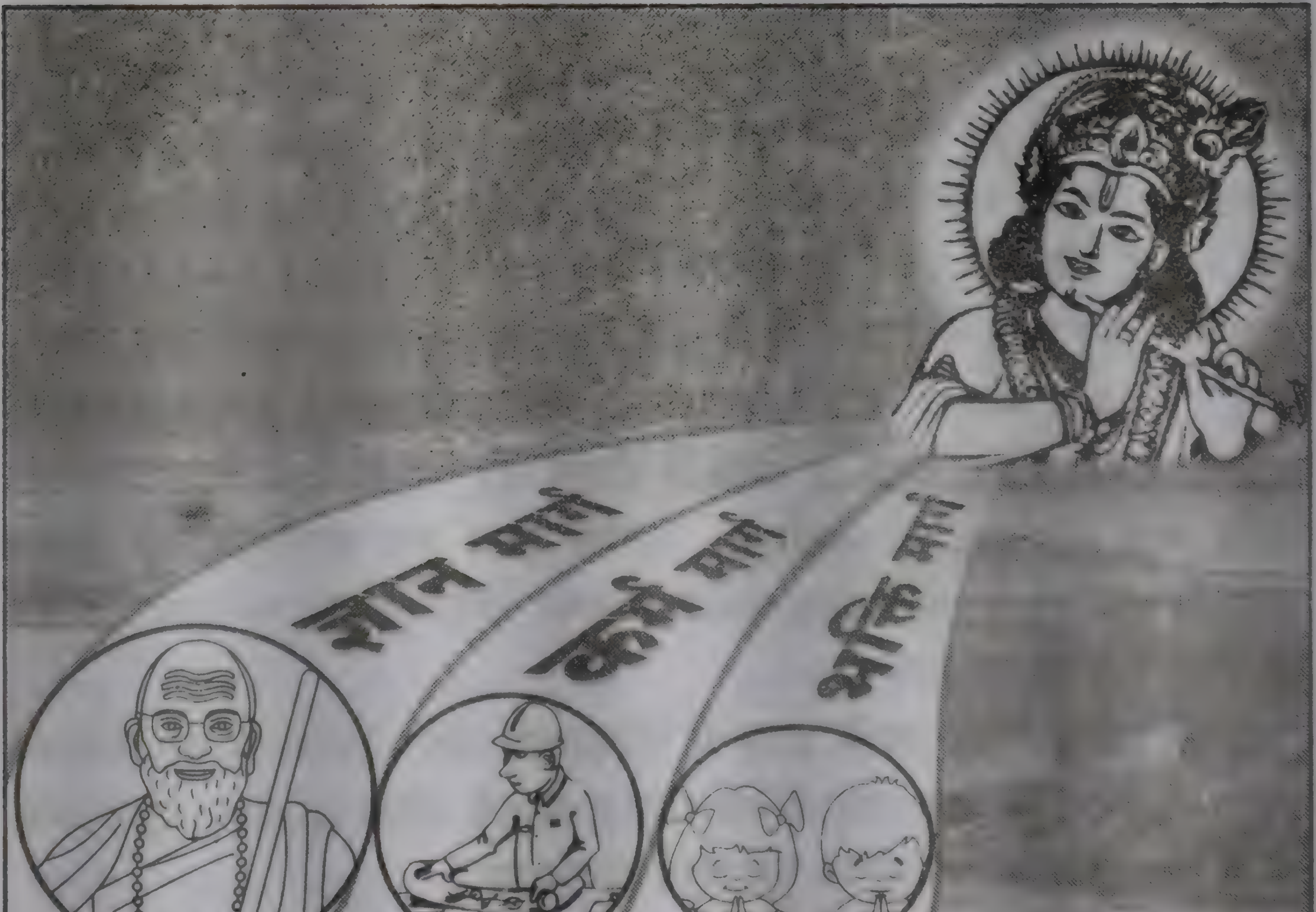
लिए एक ऐसा अनुराग उत्पन्न होता है कि वह अपने अंदर एक मीठी सी टीस अनुभव करने लगता है... अब उसके हृदय में एक ही कामना होती है कि इन चरणों से कभी जुदा न होऊँ।

गौतम बुद्ध की तरह ही दादा ने भी यही संदेश दिया कि आप भी अपने अंदर ऐसी प्रेम की अखंड ज्योति जलाइए, जिसके प्रकाश से संपूर्ण वातावरण स्नेह की ऊष्मा से भर जाए। प्यार की ऊर्जा ही कुछ ऐसी है कि सारा माहौल ईश्वरीय हो जाता है और यह शिविर भी स्नेह का एक दिव्य झील है, आप सभी इसका पूर्ण लाभ ग्रहण करें।

ईश्वर को सिर्फ़ प्रेम से ही पाया जा सकता है। इसके लिए तीन प्रमुख मार्ग हैं-ज्ञान मार्ग, कर्म मार्ग और भक्ति मार्ग।

ज्ञान मार्ग - इसे नेति-नेति मार्ग भी कहते हैं। इसमें व्यक्ति को सदैव चौकन्ना रहना होता है। यह एक कठिन मार्ग है।

कर्मयोग का मार्ग-इसमें साधक स्वयं को एक माध्यम मानता है, जो परमात्मा का एक औज़ार है और उन्हीं की शक्ति से क्रियामान है। यह अहंकारी लोगों के लिए एक कठिन मार्ग है, जब तक कि वे अहं को जड़ से उखाड़ने में सफल न हो जाएँ।



भक्तियोग का मार्ग-यह तो प्रेम और भक्ति का सबसे सरल मार्ग है। आप ईश्वर को पुकारिए और कहिए आप मुझे अपने अनुसार ढाल लें। मैं अब आपकी शरण में हूँ... यही एक भक्त की करुणा भरी पुकार होती है।

॥ महामृत्युन्जय मंत्र ॥

ओम् त्र्यंबकम् यजामहे,
सुगंधिम् पुष्टि वर्धनम्।
उर्वारुकमिव बंधनात्,
मृत्योर्मोक्षीय माम्रतात्।

२७ तारीख को रात्रि भोज के बाद ''कल हो ना हो'' शीर्षक पर एक प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इसमें एक बड़ी ही सुंदर व्याख्या थी कि अगर कल का अस्तित्व न होता तो हमारे अंदर बसी सनातन आत्मा का अस्तित्व अब तक कैसे रहता?

२८ दिसम्बर की शुरुआत भगवान शिव के महामृत्युंजय मंत्र से हुई। इस भोरवेला में हवन और आरती के साथ भजन, कीर्तन और साधु वासवानी के प्रवचन भी सुनाए गए।

२९ तारीख की सुबह पवनपुत्र हनुमान की आराधना और उनके आराध्य राम की उपासना से प्रारंभ हुई, हनुमान चालीसा का पाठ हुआ। हवन, आरती व साधु वासवानी के उपदेशों के बाद दादाजी ने ईश्वरीय स्नेह की परिभाषा कुछ इस तरह दी- एक सच्चा भक्त यह स्वीकार करता है कि मैंने ईश्वर को देखा नहीं है, छुआ नहीं है, फिर भी वे हैं और हर कदम पर मेरी रक्षा करते हैं और मुझे राह दिखलाते हैं। ईश्वर तो हमसे लुका-छिपी का खेल खेलते हैं, वे हमें ढूँढ लेते हैं और फिर हमारे अंतर में छुप कर बैठ जाते हैं और चाहते हैं कि हम उन्हें खोज निकालें।

शिविर का समापन समारोह होटल के कर्मचारियों को उपहारों के द्वारा सम्मानित करने और करीब ११६ लोगों को कृत्रिम पैर देकर उनकी जीवन यात्रा को सरल बना कर किया।

शिविर समापन के वक्त सब लोग अपने साथ एक जादूई स्नेह की अनमोल सौगात ले जा रहे थे, ताकि उसे वे अपने परिवार और आस पास के बंधु-बांधवों में बाँट सकें। •

साधु वासवानीजी के कोलकत्तावासी
एक भक्त की सस्नेह भेंट है यह पृष्ठ।

विश्व परिक्रमा

विदेशी चाहते हैं देसी शादी

लंदनः- एक सर्वे के अनुसार पश्चिमी देशों के युवा ऐशियाई अरेंजड मैरिज को बेहतर मानने लगे हैं। वे भारतीय तरीके से माँ-बाप द्वारा पसंद किए गए जीवन-साथी को ज़्यादा पसंद करने लगे हैं। वे अब बार या क्लब में अपना साथी नहीं ढूँढना चाहते। उनका मानना है कि पारिवारिक पृष्ठभूमि, शिक्षा और संस्कारों के आधार पर जोड़े गए ये रिश्ते लंबे समय तक चलते हैं और स्नेहपूर्ण होते हैं। इनमें जीवन का लक्ष्य निर्धारित होता है। एक दूसरे के प्रति स्नेह और त्याग की भावना होती है।



मनुष्यों से ज़्यादा बुद्धिमान होते हैं बंदर गणित में

शिकागोः- जोड़, घटाव, गुणा और भाग जैसी जटिल गणना केवल मनुष्य ही नहीं बंदर भी बखूबी कर सकते हैं। अमेरिका की डयुक युनिवर्सिटी की न्युरोसायन्स अनुसंधानकर्ता जेसिका कैटलोन ने एक जाँच क्रम में यह पाया कि जोड़ के मामले में बंदर भी कॉलेज के छात्रों से बहुत पीछे नहीं हैं। इस प्रयोग में बंदरों ने ७६ प्रतिशत सही उत्तर दिए और कॉलेज के छात्रों ने ९५ प्रतिशत सही उत्तर दिए। इसी तरह लघु स्मृति की जाँच में चिंपाँजी ने कॉलेज के छात्रों से कहीं ज़्यादा अच्छा प्रदर्शन किया है।

सूर्य की रोशनी बचाए लंग कैंसर से

न्यूयार्कः- सूर्य की रोशनी घातक नहीं है, बल्कि इससे फेफड़े के कैंसर का खतरा कम हो जाता है। फेफ़डे का कैंसर ७५ से ८५ प्रतिशत धूम्रपान से होता है। भूमध्यरेखा के करीब रहने वाले देशों में यह संख्या कम है क्योंकि यहाँ सूर्य की रोशनी पर्याप्त होती है, अतः रोज़ सूर्य की रोशनी में कुछ देर बैठना बहुत फ़ायदेमंद है।

बाल फिर से संभव हैं उगाना

बर्लिन :- बर्लिन के चैरेटी अस्पताल की त्वचा रोग विशेषज्ञ नताली गारसिया बार्टेल्स ने बताया कि ८० वर्ष की उम्र तक ८० प्रतिशत पुरुष गंजेपन की समस्या से ग्रस्त हो जाते हैं। हमारे सिर की खाल में टेस्टोस्ट्रोन नामक हार्मोन्स होते हैं जो जब डाईहाईटेस्टोस्ट्रोन (डी.एच.टी) में बदल जाते हैं तब बाल झड़ने लगते हैं। इसके अलावा खून में आयरन की कमी और थायराइड की बीमारी के कारण भी बालों का झड़ना शुरू हो जाता है। इसके लिए मरीज़ों को रोज़ फाइनास्टेराइड को दवा के रूप में सेवन करने के लिए दिया जाता है जिससे बालों का झड़ना रुक जाता है और नए बाल उग आते हैं। ●

साहित्य मंथन

डॉ. ज्योति द्विवेदी



<u>नौका डूबी,</u> लेखकः- रवीन्द्रनाथ टैगोर, अनुवादकः- सुबीर, प्रकाशकः- राजा पॉकेट बुक्स, ३३०/१ मेन रोड, बुराड़ी, दिल्ली-११००८४, फोनः- ३२५१०९२, ३२५११०९, मूल्यः- ६० रुपए मात्र।

विश्व साहित्य में अपने अद्वितीय योगदान के लिए महाकवि, लेखक और संगीतकार कविवर रवीन्द्रनाथ टैगोर को साहित्य जगत का प्रकाश स्तंभ माना जाता है।

नौका डूबी एक अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त उपन्यास है। यह १९०६ में प्रकाशित हुआ था। यह एक ऐसी अभागिन धर्मपत्नी की आंतरिक मार्मिक व्यथा की कहानी है, जो स्वयं को अपने ही पति से छिपाने को विवश है। विवाह की रात ही भयानक आँधी तूफान में वह बिछुड़ कर किसी और को अपना पति मान लेती है। यह युवक भी उसे यह नहीं बता पाता है कि वह उसकी पत्नी नहीं है। कई पात्रों के अन्दर चल रहे अन्तरद्वंद को शब्द देती हुई यह कृति विश्वसाहित्य की अनमोल विरासत है। रमेश, हेमनलिनी, अन्नदा बाबू, योगेन्द्र, कमला, नालिनाक्ष आदि पात्र ...कई दिनों तक विचारों पर छाए रहते हैं।

नवविधान-अरक्षणीया, लेखक- शरतचंद्र, प्रकाशक-राजा पॉकेट बुक्स, ३३०/१ मेन रोड, बुराड़ी, दिल्ली- ११००८४, मूल्यः- ५० रुपए मात्र।

शरतचंद्र की लेखनी से उपजी ये दोनों गौरवशाली रचनाएँ हैं। ये दोनों लघु उपन्यास रूढ़िवादि आदर्शों और आधुनिक समाज की विषमताओं की कहानी कहते हैं। नवविधान की नायिका ऊषा का विवाह अल्पायु में ही हो जाता है, परंतु कुछ समय बाद उसका पति विदेश जाकर एक और विवाह कर अपनी पत्नी का त्याग कर देता है। विदेशी परिवेश में पला बढ़ा यह परिवार ऊषा के कर्मकांड को पचा नहीं पाता, परंतु अंततः ऊषा के मूल्यों की विजय होती है और वह उसे अपने मन-प्राण से अपना कर उसी के रंग में रंग जाता है।

अरक्षणीया में ज्ञानदा नामक किशोरी के पिता की मृत्यु हो जाती है और उसके पिता के रिश्तेदार उस पर ऐसा आक्षेप लगाते हैं कि उसे गाँव छोड़ कर जाना होता है। उसके लालची मामा उसका विवाह अपने बूढ़े साले से तय कर देते हैं, परंतु ज्ञानदा की मामी इस जंजाल से उसे बचा लेती है। ज्ञानदा का संतोष उसके जीवन को एक नई राह देता है। ●

नूरी वाणी

काली कोठरी है ये जग सारा,
भाग्यवान है जो इससे रहता न्यारा।
अंधकूप में गिरे कई बेचारे,
मोह-माया के अंधे फँसे हैं सारे।
सौभाग्यशाली है जो इससे बाहर आ जाए,
आत्मदर्शी हो कर माया से छूट जाए।
नूरी फिर सौभाग्य उनका चाकर बने,
उनके कदमों पर सब कुछ बलिहार करे।

जग है सारा फ़ानी, फ़ानी है देह,
बीच भँवर में डूब जाते हैं कई।
जिनके पास थे लाखों-करोड़ों सिपाही,
वक्त ने चलाया नंगे पाँव उन्हें भी।
हाथी घोड़े महल रह गए यहीं,
मिट्टी के मकान थे सभी, ढह गए यहीं।
नूरी निमाणी सब लाद क्यों चले,
काल बुलावा तू भी सुन ले।

प्रकाशक - मोहन चैनानी, साधु वासवानी मिशन, १० साधु वासवानी पथ, पुणे - ४११ ००१
संरक्षक - साधु वासवानी मिशन, १० साधु वासवानी पथ, पुणे - ४११ ००१
संपादक - गुलशन दुदानी
मुद्रक - पी.व्हि. शेट्टी
मुद्रण स्थल - प्रिंट इंप्रेशन्स, १०१, रौनक इंडस्ट्रियल इस्टेट, १३१/७ बी, हड़पसर इंडस्ट्रियल इस्टेट, पुणे - ४११०१३



बाबा गंगाराम साजनदास मलानी

इन पुण्यात्मा की यह जन्म शताब्दी है। ये इस मिशन के आधार स्तंभ थे। बच्चों के प्रति विशेष स्नेह रखने वाले इन आदरणीय कर्मयोगी का नाम बड़े ही सम्मान से लिया जाता है। इनकी लेखनी ने कई रचनाओं को जन्म दिया था। साधु वासवानी मिशन का समस्त परिवार इनके चरणों में श्रद्धापूर्वक नमन करता है।

*२० मार्च जन्मशताब्दी के अवसर पर विशेष।

RNI NO. MAHHIN/2006/18593
REGD NO.: LII/RNP/M/PNCE-46/2007-2009
POSTED AT GPO ON 28th OF EVERY MONTH

क्या आप अपनी आत्मिक सम्पत्ति में वृद्धि करना चाहते हैं? तो मौन का अभ्यास करें, अभावग्रस्त दीन–दुखियों की निष्ठापूर्वक सेवा करें।

